दर्जी का बेटा बना 'हैवी-वेट हीरो', पिता ने कैंची-धागे से नहीं, हौसले से गढ़ा लवप्रीत का सपना

ASHOKA

SMA - Ashoka Express Publication

अशोका एक्सप्रेस

Member : CNSI, Delhi निर्वाण प्राप्त गीता भारती राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

Website :-www.ashokaexpress.com YouTube ashokaexpress

E-mail :-ashoka.express@live.com ashokaexpress

संपादक :- विजय कुमार भारती

प्रबंधक :- सज्जन सिंह

● वर्ष: 29 ● अंक : 28 ● नई दिल्ली ● 01 से 08 अगस्त 2026 ● पृष्ठ : 8 ● मूल्य : 2 रूपये

'आप बीजेपी के हो क्या?': पुलिसवालों के परिजनों की प्रेस कॉन्फ्रेंस के सवाल पर बोले राहुल गांधी

नई दिल्ली।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी से शुक्रवार को दिल्ली पुलिस के घायल जवानों के परिजनों की प्रेस कॉन्फ्रेंस को लेकर सवाल पूछा गया। इस पर राहुल गांधी ने जवाब दिया- आप बीजेपी के हो क्या? 20 जुलाई को छात्रों के प्रदर्शन के दौरान घायल हुए दिल्ली पुलिस के अधिकारियों और जवानों के परिजनों ने शुक्रवार सुबह प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इसमें एक सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी), एक उप-निरीक्षक और अन्य पुलिसकर्मियों के परिवार शामिल हुए। उन्होंने उस दिन की घटना बताई और न्याय की मांग की।घायल एसीपी की पत्नी ने कहा कि 20 जुलाई की रात जब उनके पति घायल हालत में घर लौटे, तो वह पल उनके और उनकी दो साल की बेटी के लिए बेहद दर्दनाक था। उन्होंने कहा कि वह दूसरे पुलिसकर्मियों के परिवारों के साथ अपना दर्द लोगों के सामने रखना चाहती हैं।

उप-निरीक्षक की बेटी ने क्या आरोप लगाया?

दिल्ली पुलिस के घायल एक घायल उप-निरीक्षक की बेटी ने आरोप लगाया कि प्रदर्शन के दौरान भीड़ ने उनके पिता पर हमला किया। उन्होंने कहा कि उनके पिता भारतीय नौसेना के पूर्व मरीन कमांडो रहे हैं। जंतर-मंतर के मंच के पास भीड़ ने उन्हें खींच लिया और पीट-पीटकर मार डालने की कोशिश की। उन्होंने बताया कि बाद में उनके पिता को आरएमएल अस्पताल ले जाया गया, जहां वह करीब चार घंटे तक बेहोश रहे।

दूसरे परिवार ने क्या आरोप लगाया?

एक अन्य घायल पुलिसकर्मी के परिजन ने कहा कि यह छात्रों का प्रदर्शन नहीं था। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ शरारती तत्वों ने छात्रों के प्रदर्शन को बदनाम करने और संसद की गरिमा को ठेस पहुंचाने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि उपद्रव करने वालों को सजा मिलनी चाहिए, जबकि असली छात्रों को उनके रिकॉर्ड की जांच के बाद छोड़ देना चाहिए।

राहुल गांधी ने पहले क्या मांग की थी?

यह घटनाक्रम राहुल गांधी की उस मांग के एक दिन बाद सामने आया है, जिसमें उन्होंने छात्रों पर कथित पुलिस कार्रवाई की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में एक स्वतंत्र उच्च स्तरीय समिति बनाने की मांग की थी। उन्होंने कहा था कि 20 जुलाई को दिल्ली के जंतर-मंतर पर छात्रों के प्रदर्शन के दौरान कथित बल प्रयोग की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए।

विशेषाधिकार नोटिस पर बढ़ा विवाद

इस बीच, छात्र प्रदर्शन को लेकर राजनीतिक टकराव और बढ़ गया है। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के सांसद अनुराग सिंह ठाकुर ने 29 जुलाई को लोकसभा में राहुल गांधी की टिप्पणी को लेकर उनके खिलाफ विशेषाधिकार नोटिस दिया। वहीं, कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल ने कहा कि उनकी पार्टी केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह के खिलाफ विशेषाधिकार प्रस्ताव लाएगी। उन्होंने आरोप लगाया कि जितेंद्र सिंह ने सदन में यह कहकर गुमराह किया कि प्रदर्शन के दौरान कोई गोली नहीं चली। वेणुगोपाल ने कहा कि राहुल गांधी ने पैलेट गन और एके-47 के इस्तेमाल के सबूत दिखाए हैं। इसलिए केंद्रीय मंत्री ने सदन को गुमराह किया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने राहुल गांधी के खिलाफ विशेषाधिकार नोटिस पर कहा कि उनकी पार्टी के सांसद सक्षम हैं और लोकसभा में इसका जवाब देंगे।

रूस-यूक्रेन जंगः सुप्रीम कोर्ट का बड़ा आदेश, कहा- मारे गए और लापता भारतीयों के परिवारों की मदद करे केंद्र

नई दिल्ली। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान नौकरी का झांसा देकर रूस भेजे गए और बाद में युद्ध के मोर्चे पर पहुंचा दिए गए भारतीय नागरिकों के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को अहम निर्देश दिए हैं। शुक्रवार को सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा कि विदेश मंत्रालय तुरंत एक नोडल अधिकारी नियुक्त करे, जो युद्ध में मारे गए, घायल हुए या अब भी लापता भारतीयों के परिवारों के साथ लगातार संपर्क बनाए रखे और उन्हें हर जरूरी जानकारी व सहायता उपलब्ध कराए। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ ने कहा कि पीड़ित परिवार पहले ही भारी मानसिक और आर्थिक संकट से गुजर रहे हैं।

ऐसे में सरकार की जिम्मेदारी है कि उन्हें समय पर सही जानकारी और हर संभव मदद मिले। विदेश मंत्रालय में एक समर्पित नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाएगा, जो पीड़ित परिवारों से सीधे संपर्क में रहेगा। युद्ध में मारे गए भारतीयों की पहचान के लिए डीएनए सैंपल का मिलान कराया जाएगा। नई दिल्ली स्थित रूसी दूतावास के समक्ष मुआवजा क्लेम दाखिल कराने में विदेश मंत्रालय परिवारों की मदद करेगा। पीड़ित परिवारों को सभी जरूरी जानकारी और प्रक्रियाएं उनकी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में उपलब्ध कराई जाएंगी। राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण और राज्य कानूनी सेवा प्राधिकरण परिवारों को मुफ्त कानूनी सहायता देंगे। यह मामला उन भारतीय युवाओं से जुड़ा है, जिन्हें ट्रैवल एजेंटों ने रूस में अच्छी नौकरी का लालच देकर भेजा था। परिवारों का आरोप है कि वहां पहुंचने के बाद कई युवाओं को उनकी इच्छा के खिलाफ रूस-यूक्रेन युद्ध के मोर्चे पर भेज दिया गया। इस दौरान कई भारतीयों की मौत हो गई, कुछ घायल हुए और कई अब भी लापता बताए जा रहे हैं। इन्हीं परिवारों ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर सरकार से अपील की थी कि उनके परिजनों का पता लगाया जाए, मृतकों के पार्थिव शरीर भारत लाए जाएं और रूसी सरकार से उचित मुआवजा दिलाने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं। सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण और राज्य कानूनी सेवा प्राधिकरणों को निर्देश दिया है कि वे पीड़ित परिवारों की हर कानूनी प्रक्रिया में मदद करें।

दिल्ली के जगतपुरी में महिला की गर्दन में कैंची घोंपकर निर्मम हत्या, वारदात के बाद से पति फरार

पूर्वी दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के जगतपुरी थानाक्षेत्र की गगन विहार सोसायटी में घर के अंदर गले मे कैंची घोंपकर एक महिला की बेरहमी से हत्या कर दी। महिला की हत्या के बाद से पति बैग लेकर स्कूटी से फरार हो गया। फरार होते वक्त घर के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे में वह कैद हो गया। आशंका है पति ने ही हत्या की है। आरोप है कि पति का किसी महिला से अवैध संबंध था, इसको लेकर दंपती के बीच विवाद रहता था। मृतक की पहचान कोमल के रूप में हुई है। जगतपुरी थाना ने हत्या का केस दर्ज किया है। फरार पति कमल की तलाश में पुलिस छापेमारी कर रही है। दोनों बच्चे पिछले पांच वर्षों से अपने पिता से बात नहीं करते थे। कोमल अपने परिवार के साथ गगन विहार सोसायटी में चार मंजिला मकान में रहती थी। दूसरी मंजिल पर कोमल का परिवार रहता था।

रुचिका के बचाव में सीजेपी 'अपशब्दों का इस्तेमाल देश में कब से अपराध, लोग रोजाना ऐसी भाषा का करते हैं इस्तेमाल'

दिल्ली । जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ अपशब्दों का इस्तेमाल करने पर नोएडा की एक लड़की के खिलाफ दर्ज हुई एफआईआर का विरोध जताया है। कॉकरोच जनता पार्टी के मुख्य प्रवक्ता सौरव दास ने कहा, 'विरोध प्रदर्शन के दौरान अपशब्दों के इस्तेमाल की निंदा की जा सकती है। लेकिन, पुलिस के जरिए उन्हें निशाना बनाने और परेशान करने के लिए आपराधिक न्याय प्रणाली का इस्तेमाल करना बिल्कुल भी सही नहीं है।'सौरभ दास ने कहा, 'इस देश में अपशब्दों का इस्तेमाल करना कब से अपराध हो गया? लोग रोजमर्रा की जिंदगी में अक्सर ऐसी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। लोकसभा के 50% सांसदों पर आपराधिक मामले चल रहे हैं, जिनमें बलात्कार, हत्या और डकैती जैसे गंभीर अपराध भी शामिल हैं, फिर भी उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होती। आप बस उन्हें अलग-थलग करके एक मिसाल बनाना चाहते हैं।'सौरव ने आगे कहा, 'यह पूरी तरह से निंदनीय है। मैं एक बार फिर सरकार और उसकी पुलिस व्यवस्था से अपील करता हूं कि वे युवाओं को परेशान करना बंद करें। इस तरह से युवाओं को निशाना बनाना बंद करें और इस लड़की को छोड़ दें। ऐसे मामलों में पुलिस बल का इस तरह का दुरुपयोग बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं है।' दिल्ली के जंतर-मंतर पर एक प्रदर्शन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ कथित तौर पर आपत्तिजनक और अभद्र टिप्पणी करने के आरोप में नोएडा के एक्सप्रेसवे थाने में आरोपी युवती रुचिका के खिलाफ जीरो एफआईआर दर्ज की गई है। चूंकि घटनास्थल दिल्ली में है, इसलिए

नोएडा पुलिस ने वैधानिक प्रक्रिया पूरी करने के बाद मामले को आगे की तफ्तीश के लिए संबंधित दिल्ली पुलिस को हस्तांतरित कर दिया है।

अधिवक्ता ने दर्ज कराई प्राथमिकी

यह कार्रवाई गाजियाबाद के वसुंधरा क्षेत्र की रहने वाली अधिवक्ता स्मृति सिंह की शिकायत पर की गई है। शिकायत के मुताबिक, नोएडा के सेक्टर-168 स्थित एक हाईराइज सोसायटी में रहने वाली रुचिका सिंह ने जंतर-मंतर पर आयोजित एक प्रदर्शन के दौरान सार्वजनिक मंच से प्रधानमंत्री के लिए बेहद आपत्तिजनक और अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल किया।

सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था वीडियो

शिकायतकर्ता अधिवक्ता का कहना है कि इस प्रकार की अभद्र टिप्पणी से देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद की गरिमा को ठेस पहुंची है। साथ ही, इससे समाज में वैमनस्य फैलने और लोक शांति भंग होने की प्रबल आशंका उत्पन्न हुई। बताया गया है कि प्रदर्शन का एक वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ था, जिसके बाद शिकायतकर्ता ने आरोपी की जानकारी जुटाई और नोएडा पुलिस से संपर्क कर मामला दर्ज कराया।

जांच के लिए दिल्ली भेजी गई एफआईआर

आरोपी युवती मूल रूप से फरीदाबाद की रहने वाली है और एक ब्यूटी पार्लर संचालिका है। उसने नोएडा की सोसायटी में एक फ्लैट खरीदा है। एक्सप्रेसवे थाना पुलिस जब मामले की जांच के लिए उसके फ्लैट पर पहुंची, तो वहां ताला लटका मिला। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की संबंधित धाराओं के तहत जीरो एफआईआर दर्ज की है।

पुलिस का बयान

मामले की पुष्टि करते हुए एडीसीपी नोएडा, मनीषा सिंह ने बताया कि शिकायत मिलने पर नियमानुसार जीरो एफआईआर दर्ज कर ली गई है। चूंकि कथित अपराध स्थल दिल्ली का जंतर-मंतर है, इसलिए मामले से जुड़े सभी अभिलेख और एफआईआर आगे की विवेचना और आवश्यक कानूनी कार्रवाई के लिए दिल्ली पुलिस को भेज दिए गए हैं। अब इस मामले की आगे की जांच दिल्ली पुलिस करेगी।

नारीवाद हार रहा है?

अमरीका की हन्ना नीलमैन और नारा स्मिथ जैसी सोशल मीडिया हस्तियां केवल लोकप्रिय नहीं हुईं, वे एक बहस बन गईं। उनके वीडियो में कोई क्रांति नहीं होती, बस एक शांत रसोई, बच्चों की खिलखिलाहट, घर की लय और बिना हड़बड़ी का जीवन। आश्चर्य यह है कि इन्हें सबसे अधिक वही पीढ़ी देख रही है जिसे हम 'जेन-की' कहते हैं। आज, 21वीं सदी के तीसरे दशक में एक विचित्र दृश्य सामने है। सोशल मीडिया पर लाखों युवतियां लिनन के सादे वस्त्रों में रोटी सेंकती दिखाई देती हैं, बगीचे से फूल तोड़ती हैं, बच्चों के लिए भोजन बनाती हैं, पति के लौटने की प्रतीक्षा करती हैं और इस जीवन को गर्व से 'ट्रैड वाइफ' अर्थात (ट्रेडिशनल/पारंपरिक पत्नी) का नाम देती हैं। सोशल मीडिया से उपजा यह शब्द कुछ ही वर्षों में पश्चिमी दुनिया में करोड़ों बार देखा और सुना जाने लगा। प्रश्न उठना स्वाभाविक है, क्या यह नारीवाद की पराजय है? क्या आधुनिक स्त्री सचमुच फिर से अतीत की ओर लौटना चाहती है? या कहानी कुछ और है? पहली दृष्टि में यह प्रश्न दृश्य जितना सरल दिखाई देता है, वास्तविकता उससे कहीं अधिक जटिल है। अक्तूबर, 2025 में किंग्स कॉलेज लंदन के ग्लोबल इंस्टीच्यूट फॉर वुमन्स लीडरशिप द्वारा 18 से 34 वर्ष की महिलाओं पर किए गए अध्ययन ने एक रोचक तथ्य सामने रखा। लगभग 59 प्रतिशत युवतियों ने माना कि 'ट्रैड वाइफ' की सोच समाज पर नकारात्मक या हानिकारक प्रभाव डाल सकती है, जबकि केवल लगभग 5 में से 1 महिला ने इसे सकारात्मक माना। यदि ऐसा है, तो फिर यह प्रवृत्ति इतनी लोकप्रिय क्यों हो रही है? शोधकर्त्ताओं का उत्तर विचारणीय था। उनके अनुसार महिलाओं को पारंपरिक पुरुष-प्रधान व्यवस्था की लालसा नहीं है लेकिन वे उस जीवन से थक चुकी हैं, जिसमें उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे पेशेवर यानि करियर की दुनिया में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करें, आर्थिक रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर भी रहें और घर की अधिकांश जिम्मेदारियां भी निभाएं। यह आंदोलन परंपरा का उत्सव कम और मानसिक थकान का मौन प्रतिरोध अधिक प्रतीत होता है। यहीं से चर्चा का केंद्र बदल जाता है। दरअसल दशकों तक स्त्रियों से कहा गया कि स्वतंत्रता का रास्ता केवल आर्थिक प्रतिस्पर्धा से होकर जाता है। बताया गया कि पहचान परिवार से

शायद 'ट्रैड वाइफ' आंदोलन का सबसे बड़ा संदेश यही है कि आज की स्त्री केवल आर्थिक स्वतंत्रता नहीं, भावनात्मक स्थिरता भी चाहती है। वह केवल करियर नहीं, परिवार भी चाहती है। इसलिए वास्तविक संघर्ष नारीवाद और परंपरा के बीच नहीं है। वास्तविक संघर्ष उस जीवन-दर्शन के विरुद्ध है, जिसने स्त्री की सफलता को उसकी पेशेवर सफलता से मापना शुरू कर दिया है। शायद प्रश्न यह नहीं है कि स्त्री घर लौटना चाहती है या दफ्तर जाना चाहती है। प्रश्न यह है कि क्या हमने ऐसा समाज बनाया है, जहां उसे दोनों में से किसी एक को चुनने की विवशता न हो? क्योंकि स्वतंत्रता का सर्वोच्च रूप विकल्पों की बहुलता है, न कि किसी एक जीवन-पद्धति को आधुनिकता और दूसरी को पिछड़ेपन का प्रमाणपत्र दे देना।

नहीं, पद से बनेगी, सम्मान रिश्तों से नहीं, वेतन से मिलेगा और सफलता का शिखर घर नहीं, पेशेवर दुनिया में ऊंची कुर्सी है। लेकिन आज वही पीढ़ी पूछ रही है, यदि यही सफलता है, तो सुकून कहां है? यदि किसी विचारधारा ने स्त्री से कहा था कि वह हर बंधन से मुक्त होगी, तो फिर आज वह पहले से अधिक तनावग्रस्त क्यों दिखाई देती है? यदि स्वतंत्रता का अर्थ केवल काम के घंटे बढ़ जाना, परिवार और बच्चों को समय न देने का अपराधबोध बढ़ जाना और अकेलापन बढ़ जाना रह गया है, तो क्या उस स्वतंत्रता की परिभाषा पर पुनर्विचार नहीं होना चाहिए? समस्या यह नहीं कि स्त्री ने काम करना शुरू किया, समस्या यह है कि उसे यह विश्वास दिलाया गया कि घर और परिवार को महत्व देना उसकी महत्वाकांक्षा की हार है। यहीं आधुनिक नारीवाद अपनी सबसे बड़ी वैचारिक भूल करता दिखाई देता है। उसने विकल्प देने का दावा किया लेकिन धीरे-धीरे उसने एक नया आदर्श गढ़ दिया-ऐसी स्त्री, जो लगातार उत्पादक हो, लगातार सफल हो, लगातार स्वयं को सिद्ध करती रहे।नतीजन आज पश्चिम की अनेक युवतियां यह नहीं कह रहीं कि उन्हें अधिकार नहीं चाहिए। वे यह कह रही हैं कि उन्हें ऐसा जीवन चाहिए, जिसमें अधिकारों के साथ अपनापन भी हो, आय के साथ आत्मीयता भी हो और उपलब्धियों के साथ घर-परिवार का सुकून भी हो। यह विद्रोह रसोई के पक्ष में नहीं है, यह उस जीवन के विरुद्ध है जिसने सफलता को थकान का दूसरा नाम बना दिया। आज का सबसे बड़ा भ्रम यह है कि परिवार और स्वतंत्रता एक-दूसरे के विरोधी हैं। भारतीय दृष्टि कभी ऐसा नहीं मानती थी। यहां परिवार बंधन नहीं, सहारा था, दायित्व बोझ नहीं, संबंधों का विस्तार था। आधुनिकता ने व्यक्ति को स्वतंत्र तो बनाया लेकिन कई बार उसे अकेला भी छोड़ दिया। यही कारण है कि आज 'ट्रैड वाइफ' का आकर्षण केवल एप्रन या रसोई नहीं, उसका आकर्षण वह भाव है कि कोई घर है जहां लौटना सार्थक लगता है। इसका अर्थ यह नहीं कि हर स्त्री गृहिणी बनना चाहती है। इसका अर्थ यह भी नहीं कि किसी स्त्री का करियर उन्मुख होना गलत है। लेकिन इसका अर्थ यह अवश्य है कि उस विचारधारा पर प्रश्न उठ रहे हैं, जिसने जीवन के एक ही मॉडल को प्रगति का प्रमाणपत्र बना दिया था। यदि प्रगति स्त्री से उसका घर, उसका समय, उसके रिश्ते और उसकी मुस्कान छीन ले, तो क्या उसे अब भी प्रगति कहा जाना चाहिए? शायद इसलिए यह विमर्श किसी एप्रन, किसी रसोई या किसी वायरल वीडियो का नहीं है, यह विमर्श उस सभ्यता का है, जिसने स्त्री को आकाश तो दिया, पर कई बार उसके पैरों तले की धरती खींच ली। शायद 'ट्रैड वाइफ' आंदोलन का सबसे बड़ा संदेश यही है कि आज की स्त्री केवल आर्थिक स्वतंत्रता नहीं, भावनात्मक स्थिरता भी चाहती है। वह केवल करियर नहीं, परिवार भी चाहती है। इसलिए वास्तविक संघर्ष नारीवाद और परंपरा के बीच नहीं है। वास्तविक संघर्ष उस जीवन-दर्शन के विरुद्ध है, जिसने स्त्री की सफलता को उसकी पेशेवर सफलता से मापना शुरू कर दिया है। शायद प्रश्न यह नहीं है कि स्त्री घर लौटना चाहती है या दफ्तर जाना चाहती है। प्रश्न यह है कि क्या हमने ऐसा समाज बनाया है, जहां उसे दोनों में से किसी एक को चुनने की विवशता न हो? क्योंकि स्वतंत्रता का सर्वोच्च रूप विकल्पों की बहुलता है, न कि किसी एक जीवन-पद्धति को आधुनिकता और दूसरी को पिछड़ेपन का प्रमाणपत्र दे देना। और संभवतः आने वाला समय इसी सत्य को पुनः खोजने वाला है।

सम्पादकीय

सैलिब्रिटीज की प्रतिष्ठा

आए दिन हमें यह देखने को मिलता है कि उद्योग जगत, मनोरंजन जगत, आध्यात्मिक संस्थाओं और खेल जगत की कुछ नामी-गिरामी हस्तियों के नाम बार-बार 'मनी लॉन्ड्रिंग', फर्जी सौदों और संदिग्ध वित्तीय लेन-देन के मामलों में चर्चा में आते हैं। ये वे लोग हैं, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी मेहनत, प्रतिभा और लोकप्रियता से करोड़ों प्रशंसकों का दिल जीता है। फिर भी इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं, जो अपनी अच्छी छवि को दांव पर लगाकर काले धन के सौदों में उलझ जाते हैं। इसका एक बड़ा कारण है लोभ। सफलता के बाद भी और अधिक धन और अधिक पावर की भूख कभी नहीं मिटती। कई बार वे सोचते हैं कि उनकी छवि इतनी मजबूत है कि कोई उन पर उंगली नहीं उठाएगा। कुछ लोग अपने व्यवसाय को 'विविधीकरण' का नाम देकर रियल एस्टेट, शैल कंपनियों, दान के नाम पर काले धन को सफेद करना या विदेशी खातों के जरिए धन छिपाने की कोशिश करते हैं। कई मामलों में यह भी देखने को मिलता है कि ये लोग अपने सरकारी संपर्कों और प्रभावशाली लोगों से परिचित होने के कारण अत्यधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं। उन्हें लगता है कि जांच एजेंसियां उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं करेंगी या मामला दबा दिया जाएगा। लेकिन लोकतंत्र में कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं है, चाहे वह कितना भी लोकप्रिय क्यों न हो। फिर भी व्यवहार में कई बार प्रभावशाली लोगों के खिलाफ जांच धीमी पड़ जाती है या सबूतों की कमी का हवाला देकर मामले कमजोर हो जाते हैं। भारत में प्रवर्तन निदेशालय (ई.डी.), आयकर विभाग और अन्य एजेंसियां जब ऐसे मामलों की जांच करती हैं, तो अक्सर आरोपियों को सजा नहीं दिला पातीं। इसके कई कारण हो सकते हैं। जटिल कानूनी प्रक्रियाएं, सबूतों की कमी, गवाहों का दबाव में आना या लंबी अदालती सुनवाई। कभी-कभी राजनीतिक प्रभाव या संसाधनों की कमी भी जांच को प्रभावित करती है। लेकिन ऐसे 'जाहिर कारणों' से बरी होना या मामला रुक जाना समाज में गलत संदेश देता है। इस स्थिति में अदालतें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। स्वतंत्र न्यायपालिका को चाहिए कि वह ऐसे मामलों में तेजी से सुनवाई करे, सबूतों का निष्पक्ष मूल्यांकन करे और दोषियों को उचित सजा दे। विशेष अदालतें या फास्ट-ट्रैक प्रक्रियाएं मनी लॉन्ड्रिंग जैसे आर्थिक अपराधों के लिए बनाई जा सकती हैं। अदालतें एजेंसियों को स्पष्ट निर्देश दे सकती हैं कि जांच में देरी न की जाए और कोई भी प्रभाव जांच को बाधित न करे। साथ ही, अगर कोई व्यक्ति अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके जांच को प्रभावित करने की कोशिश करे तो उसके खिलाफ भी कार्रवाई होनी चाहिए। न्याय तभी प्रभावी होगा, जब वह बिना भेदभाव के लागू हो। एजेंसियों को चाहिए कि वे शिकायतों को गंभीरता से लें, चाहे आरोपी कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो। शिकायत दर्ज होने के बाद प्रारंभिक जांच तुरंत शुरू होनी चाहिए और सबूतों को सुरक्षित रखा जाना चाहिए। यदि शिकायत में गंभीर आरोप हों और उसके ठोस प्रमाण भी संलग्न हों तो जांच एजेंसियों की जिम्मेदारी हो कि शिकायतकर्त्ता की पहचान को गुप्त रखा जाए। सामान्य दस्तावेजी सबूतों में बैंक स्टेटमैंट, प्रॉपर्टी दस्तावेज, कंपनी रजिस्ट्रेशन पेपर्स, इंकम टैक्स रिटर्न और संदिग्ध लेन-देन के रिकॉर्ड शामिल हो सकते हैं। डिजिटल सबूत आज के समय में सबसे महत्वपूर्ण हैं। ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग, ईमेल, व्हाट्सएप या अन्य मैसेजिंग ऐप की चैट, सोशल मीडिया पोस्ट, डिजिटल वॉलेट के लेन-देन, क्रिप्टोकरेंसी ट्रांजैक्शन, क्लाऊड स्टोरेज में सेव की गई फाइलें और सर्वर लॉग।

ये जेन ज़ी-जेन ज़ी क्या है?

ये जेन ज़ी, जेन ज़ी क्या है? माने नौजवान हैं, अच्छी बात है। माने पढ़े-लिखे हैं, और अच्छी बात है। अपना दिमाग रखते हैं, यह भी बुरा नहीं है। किसी के कहने भर से कुछ नहीं मानते, किसी के कहने से कुछ नहीं करते, जो सही जंचे वही करते हैं, यह सब तो अच्छा है। लेकिन, इसका मतलब यह थोड़े ही है कि अपनी संस्कृति-संस्कार, सब को भूलकर किसी की भी खिल्ली उड़ाने लग जाएंगे। अब बताइए, इन्हीं के इस्तीफा दो, इस्तीफा दो की रट पकड़ने पर, धर्मेंद्र प्रधान जी ने इस्तीफा दिया। इन्हीं की और इन्हीं के भाई-बांधवों की सेवा करने के लिए जो पद संभाला था, उस पद से इस्तीफा दिया। इस्तीफा दिया कि इन्हीं के जरिए भारत-विरोधी षड्यंत्र आगे न बढ़ने पाएं और राष्ट्र विरोधी ताकतों के मंसूबे कहीं सफल न हो जाएं। इनके एंटी-नेशनल आकाओं से लड़ने के लिए, भारत माता के चरणों में अपनी गद्दी का सिर काट कर चढ़ा दिया। पर राष्ट्र के लिए उनकी कुर्बानी का खुद सम्मान नहीं करना था तो नहीं करते, पर ये तो भगवा पार्टी के सांसदों ने संसद के दरवाजे पर प्रधान का सम्मान करने का भी मजाक उड़ा रहे हैं। और दलीलें तो ऐसी-ऐसी फालतू कि कुछ पूछो ही मत। कह रहे हैं कि टोपी पहनाकर और शॉल ओढ़ाकर यह किस का सम्मान हो रहा है? 2024 के पेपर लीक के बाद, 2026 में पेपर लीक के रिपीट होने का सम्मान? सीबीएसई परीक्षा कॉपियों की जांच की धांधली का सम्मान? परीक्षा दर परीक्षा गड़बड़ी के अनोखे रिकार्ड का सम्मान? नीट की चोरी की वजह से 22 बच्चों के जान गंवाने का जश्न? किस बात का सम्मान? अगले ने अपनी गद्दी का सिर काटकर मां भारती के चरणों में चढ़ा दिया और ये हैं कि अगले को टोपी पहनाने पर हुज्जत कर रहे हैं--ऐसे नाशुक्रे हैं ये जेन ज़ी! और ये धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा मांगने पर ही रुक जाते, तब तो फिर भी इनकी एंटीनेशनलता को बच्चा समझ कर माफ किया जा सकता था। ये तो प्रधान जी के प्रातः आराध्य, देवतुल्य मोदी जी की भी खिल्ली उड़ाते हैं। मोदी जी ने रातों में बारह-बारह बजे तक जागकर रीलें बनायीं और वह भी सेल्फी मोड में अकेले-अकेले। पता नहीं टेलीप्रॉम्प्टर भी साथ में था या नहीं। और इन्होंने न उम्र का ख्याल किया, ना उनकी फ्रेंडशिप कबूल की, उल्टे कैमरा एंगल, कैमरे से दूरी के खोट और निकालने लगे। उधर खुद, भीड़ में तो भीड़ में, अकेले-अकेले अपने सोशल मीडिया खातों में भी, अगले के ऐसे-ऐसे मीम बना रहे थे, ऐसे-ऐसे नारे उठा रहे थे, ऐसे-ऐसे कैरीकेचर बना रहे थे और ऐसे-ऐसे गाने बना रहे थे कि पूछो मत। और हद्द तो यह हो गयी कि अगले अंग्रेजी में भिगो-भिगो के, शुद्ध देसी गालियां भी दे रहे थे और वह भी शाकाहारी गालियां ही नहीं, तरह-तरह की हिंदू सेनाओं के सेनापतियों की भारी-भारी गालियों की टक्कर की गालियां! हिंदू भक्ति में मुकाबला करने में इनकी नानी मरती है, पर हिंदू सैनिकों से गालियों में इनसे मुकाबला करा लो, ऐसे हैं ये जेन ज़ी! और ये जो जेन ज़ी की कुर्बानियों के गीत गाए जा रहे हैं, ये सब राई का पहाड़ बनाने वाली बातें हैं। जून-जुलाई की तपती गर्मी में राजधानी में जंतर-मंतर पर आकर बैठ ही गए तो क्या हो गया? ये रहते तो ज्यादा टैम इंटरनेट पर और अपने फोन में ही हैं। इन्हें कहां गर्मी, बारिश, तपिश, उमस कुछ भी महसूस होता है? इन्हें कहां टैम का पता चलता है--बैठ गए तो बैठे रह गए एक महीने।

रही बात भूख हड़ताल वगैरह की तो इन्हें खाने का होश ही कहां रहता है? मांऐं ही पीछे पड़ी रहती हैं कि बेटा खा ले, कुछ तो खा ले; तब बड़ा एहसान पटकते हुए दो-चार ग्रास खा लें तो खा लें, वर्ना ये तो यूं भी हवा खाकर ही जिंदा रहते हैं। बीस-बाईस दिन की भूख हड़ताल तो इनके लिए कुछ भी नहीं है। और रही पुलिस की मार के सामने भी डटे रहने की बात, किसी से नहीं डरने की बात, तो ये इस दुनिया को जानते ही कितना हैं, जो डरेंगे? पहले किसी जुलूस-वुलूस में गए नहीं, पुलिस की लाठी खाई नहीं, गोली चलती देखी नहीं, जेल की सूरत देखी नहीं। और तो और जमकर पिटाई तक नहीं खाई, न मां-बाप से, न स्कूल में और न मोहल्ले-पड़ोस में। 20 जुलाई को जो हुआ, इन्हें शुरू में तो वीडियो गेम लगा होगा।

बाद में फंस गए, तो करते भी तो क्या करते? मजबूरी का नाम महात्मा गांधी। खुद तो शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारी बन गए और बेचारे पुलिस वालों को जल्लाद के नाम से बदनाम कर दिया। अब जंतर-मंतर पर पैलेट गन चलने का शोर मचा रहे हैं, जबकि इन्हें पुलिस को थैंक यू कहना चाहिए, एके 47 नहीं चलाने के लिए। क्या सोचते हैं, एके 47 क्या सिर्फ बिहार के पुलिस वाले ही चलाना जानते हैं? शाह साहब के डाइरेक्ट कंट्रोल में, दिल्ली पुलिस को अपने बिहारी बिरादरों से कमजोर दिल का समझा है क्या? रही पैलेट गन की बात तो, इन जेन ज़ी वालों ने क्या समझा था कि पैलेट गन इस्राइल से चलकर कश्मीर तक आ सकती है, तो देश में आगे नहीं जाएगी और सिर्फ कश्मीर में ही रहेगी!

कितने भोंदू हैं ये जेन ज़ी वाले। भगवाधारियों को इन जेन ज़ी वालों को देशभक्ति सिखानी ही पड़ेगी। प्यार से सीखें तो प्यार से, नहीं तो मार से। वर्ना ये तो देश को बर्बाद ही कर देंगे। देश का भविष्य, देश का भविष्य सुन सुनकर ये कुछ ज्यादा ही सिर चढ़ गए हैं। मोदी जी ने एक महीने जंतर-मंतर पर क्या बैठने दिया, इन्होंने तो सारी दुनिया में भारत का नाम ही खराब कर दिया। पुलिस की लाठी, पुलिस की आंसू गैस, पुलिस की गोली, सब सारी दुनिया को दिखा दिया और अमृत काल को, दुनिया वालों की नजरों में तानाशाही काल बना दिया। इनमें जरा भी देशभक्ति होती, तो क्या ये एक जरा से पेपर लीक को लेकर इतना भारी हंगामा खड़ा करते और वह भी यह जानते-समझते हुए कि इंटरनेट के इस जमाने में, गोदी मीडिया भी बहुत काम का नहीं रह गया है--बाकी दुनिया से कुछ भी छुपा नहीं रह पाता है। उल्टे कॉकरोच बनकर ये तो लंदन, न्यूयार्क वगैरह में भी प्रदर्शन करने के लिए सड़कों पर निकल आए, भारत को बदनाम करने के लिए--ऐसे एंटीनेशनल हैं ये जेन ज़ी। और इनके हमदर्द--वो तो सब के सब सुर्खे हैं। उंगली पकड़ कर पहुंचा पकड़ रहे हैं; प्रधान का इस्तीफा मिल गया, अब शाह जी का इस्तीफा मांग रहे हैं। इनका क्या है, कल मोदी जी का भी इस्तीफा मांगने लग जाएंगे। ऐसे-ऐसों की हिम्मत बढ़ा रहे हैं, ये जेन ज़ी वाले।

स्वामी, प्रकाशक वं मुद्रक विजय कुमार ने अशोक सम्राट प्रिन्टर्स, 215, पीरागढ़ी गांव, दिल्ली-87 से मुद्रित कर बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-110086 प्रकाशित किया। सम्पादक : विजय कुमार। (RNI No. 70098/99) इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी हैं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगें। Phone : 9810674206

सेट पर रश्मिका मंदाना को लगी गंभीर चोट?

डांस सीक्वेंस के दौरान हुआ हादसा; डॉक्टर ने दी छह हफ्ते आराम की सलाह

अभिनेत्री रश्मिका मंदाना को एक डांस सीक्वेंस की शूटिंग के दौरान गंभीर चोट लगी है। रिपोर्ट्स के अनुसार, उनके कूल्हे में गंभीर चोट आई है, जिसके चलते अभिनेत्री को करीब छह हफ्ते आराम करने की सलाह दी गई है। चोट उनकी आने वाली फिल्म के मुश्किल एक्शन और डांस सीक्वेंस के दौरान लगी है। खबरों के मुताबिक, एक डांस सीक्वेंस की शूटिंग के दौरान एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना के कूल्हे की टेंडन पूरी तरह से अलग हो गई। इस चोट की वजह से उन्हें छह हफ्ते आराम और रिहैबिलिटेशन की सलाह दी गई है। इसके चलते अभिनेत्री को वापस शूटिंग पर लौटने में अब कुछ समय लगेगा। बता दें कि रश्मिका इन दिनों फिल्म 'रणबाली' और 'मैसा' की तैयारियों में व्यस्त हैं। मेडिकल एक्सपर्ट्स ने चोट की गंभीरता पर हैरानी जताई है। उनका कहना है कि ऐसे मामले आमतौर पर प्रोफेशनल एथलीट्स में ही देखने को मिलते हैं। रश्मिका को लगी चोट से अंदाजा लगाया जा सकता है कि फिल्मों की शूटिंग में कितना ज्यादा शारीरिक जोर लगाना पड़ता है। खबरों के अनुसार, डॉक्टरों ने रश्मिका को एक व्यवस्थित रिहैबिलिटेशन प्रोग्राम से गुजरने की सलाह दी है, ताकि शूटिंग फिर से शुरू करने से पहले वे पूरी तरह स्वस्थ हो सकें। वर्क फ्रंट की बात करें तो अभिनेता विजय देवरकोंडा से शादी के बाद उन्होंने अपनी नई फिल्म 'मैसा' की शूटिंग फिर से शुरू कर दी है। 'मैसा' का निर्देशन नवोदित निर्देशक रवींद्र पुल्ले कर रहे हैं, जबकि इसे अनफॉर्मूला फिल्म्स के बैनर तले बनाया जा रहा है। यह फिल्म गोंड जनजाति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित एक इमोशनल एक्शन थ्रिलर बताई जा रही है। रश्मिका इसमें एक गोंड महिला की भूमिका निभा रही हैं। इसके अलावा वे अपने एक्टर-पति विजय देवरकोंडा के साथ फिल्म 'रणबाली' में नजर आएंगी।

'राम युग की शुरुआत', रणबीर कपूर की 'रामायण' के ट्रेलर पर संदीप वांगा का रिएक्शन; फिल्म की जमकर की तारीफ

नितेश तिवारी की 'रामायण' का ट्रेलर रिलीज होने के बाद यह फिल्म चर्चा का बड़ा विषय बन गई है। सोशल मीडिया पर लोग अपने-अपने रिएक्शन दे रहे हैं। इस बीच फिल्ममेकर संदीप रेड्डी वांगा ने भी फिल्म के ट्रेलर पर अपना रिएक्शन दिया है। संदीप वांगा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर ट्रेलर को लेकर अपनी बात शेयर की। उन्होंने फिल्म के पहले लुक और इसके भव्य पैमाने की तारीफ करते हुए इसे 'राम युग की शुरुआत' बताया। ट्रेलर पर रिएक्ट करते हुए वांगा ने लिखा, 'ये राम युग का आरंभ है। ये सिर्फ एक ट्रेलर नहीं है, बल्कि यह हमेशा याद दिलाने वाला है कि धर्म की हमेशा अधर्म पर जीत होती है।' ट्रेलर में रणबीर कपूर को भगवान राम के रूप में दिखाया गया है, जिसमें अयोध्या में उनके जीवन की झलक देखने को मिलती है। इसमें राजा दशरथ (अरुण गोविल) और कैकेयी (लारा दत्ता) के साथ उनके सीन भी नजर आते हैं। साई पल्लवी सीता के किरदार में दिखाई देती हैं, वहीं यश रावण के रूप में दमदार एंट्री करते हैं। रवि दुबे लक्ष्मण के रोल में नजर आए हैं। हालांकि, इस ट्रेलर में सनी देओल के हनुमान वाले किरदार को अभी छुपाकर रखा गया है। नितेश तिवारी के निर्देशन में बनी 'रामायण' दो भाग में रिलीज होगी। इसके पहले भाग का ट्रेलर बीते 24 जुलाई को रिलीज होने वाला था पर इसे टाल दिया गया। फिल्म इसी साल दिवाली के मौके पर दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसमें रणबीर कपूर, साई पल्लवी, सनी देओल, रवि दुबे और यश मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे।

पोल्का डॉट प्रिंटेड ड्रेस में नितांशी गोयल का दिलकश अंदाज; तस्वीरें देख फैंस बोले- 'फूल कुमारी मैडम'

फिल्म 'लापता लेडीज' की भोली-भाली फूल कुमारी तो याद होगी? यह भूमिका अभिनेत्री नितांशी गोयल ने निभाई। मूवी में सादगी वाले अंदाज में नजर आईं एक्ट्रेस फिलहाल अपने स्टाइलिश फोटोशूट को लेकर सुर्खियां बटोर रही हैं। इसमें उनका बोल्ड अंदाज देखने को मिल रहा है। नितांशी गोयल ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से कुछ फोटोज शेयर किए हैं। वे ब्राउन कलर की मिनी ड्रेस पहनी दिख रही हैं। उन्होंने अपना लुक सिंपल रखा है, इसके बावजूद बेहद आकर्षक लग रही हैं। नितांशी गोयल की तस्वीरें देख फैंस उनके लुक की तारीफें कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, 'फूल मैडम'। एक अन्य यूजर ने लिखा, 'गॉर्जियस'। एक यूजर ने लिखा, 'इस प्यारी लड़की की शानदार तस्वीरों के साथ जुलाई ने इस अंदाज में विदा ली है'। 'लापता लेडीज' में अपनी भूमिका के लिए नितांशी को खूब तारीफें मिली थीं। उन्हें इसके लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का आईफा पुरस्कार भी मिला था। नितांशी गोयल उत्तर प्रदेश के नोएडा से ताल्लुक रखती हैं। उनका जन्म 12 जून 2007 को नोएडा में हुआ। नितांशी ने अपने करियर की शुरुआत एक बाल कलाकार के रूप में की थी। वे कई फैशन शो और विज्ञापनों में नजर आईं।

किडनी-लिवर की रिपोर्ट को लेकर डरे पवन सिंह

खुद डॉक्टर बन इंटरनेट पर मेडिकल टर्म्स सर्च किए, मेडिकल रिपोर्ट टेबल पर फेंकी

भोजपुरी अभिनेता पवन सिंह अपनी सेहत और मेडिकल रिपोर्ट को लेकर काफी हैं। आगामी शो 'भोजपुरी बवाल' के सेट से एक वीडियो सामने आया है, जिसमें पवन सिंह अपनी किडनी और लिवर की टेस्ट रिपोर्ट को लेकर चिंता जताते दिख रहे हैं। अपनी ज्यादा सोचने (ओवरथिंकिंग) की आदत की वजह से पवन सिंह डॉक्टर की सलाह का इंतजार करने के बजाय खुद ही इंटरनेट और एलेक्सा पर मेडिकल टर्म्स सर्च करने लगे। यह शो 2 अगस्त से जियोहॉटस्टार पर स्ट्रीम होने जा रहा है। वीडियो में पवन सिंह अपने साथियों के साथ सोफे पर बैठे नजर आ रहे हैं। वे परेशान होकर पूछते हैं, 'रिपोर्टवा सही आई ना रे?' इस पर उनकी टीम के सदस्य उन्हें दिलासा देते हैं कि लाखों लोगों का आशीर्वाद उनके साथ है, उन्हें कुछ नहीं होगा।

हालांकि, पवन सिंह अपनी ओवरथिंकिंग की आदत को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि उन्हें जरूरत से ज्यादा सोचने की बीमारी है। जैसे ही टीम का एक सदस्य हाथ में रिपोर्ट की फाइल लेकर आता है, पवन सिंह तुरंत पूछते हैं कि इसमें कोई डराने वाली बात तो नहीं है। रिपोर्ट खुद समझने की कोशिश में पवन सिंह की टीम फोन पर एलेक्सा से मेडिकल शब्दों के मतलब पूछने लगती है। जब टीम ने 'TLC' का मतलब पूछा, तो एलेक्सा ने इसका जवाब 'टेंडर लविंग केयर' दिया। यह सुनकर पवन सिंह और उनकी पूरी टीम सोच में पड़ गई। इसके बाद पवन सिंह ने किडनी और लिवर की रिपोर्ट देखते हुए हीमोग्लोबिन के बारे में पूछा। फाइल देखते समय पवन सिंह खुद ही डॉक्टर की तरह रिपोर्ट का विश्लेषण करने लगे। उन्होंने रिपोर्ट में 10,700 का आंकड़ा देखकर कहा कि जब नॉर्मल रेंज 6,000 से 15,000 के बीच होती है, तो यह रिपोर्ट ठीक होनी चाहिए। फिर उन्होंने सवाल उठाया कि इसे काला (हाईलाइट) क्यों किया गया है। रिपोर्ट में लिखे मेडिकल शब्दों को समझ न पाने और असमंजस की स्थिति बनने पर पवन सिंह इतने चिढ़ गए कि उन्होंने फाइल टेबल पर पटक दी।

डॉक्टर के सवाल पर बोले- पता नहीं एलेक्सा मौसी है या भौजी

माहौल में हंसी-मजाक तब बढ़ गया जब डॉक्टर का फोन आया। पवन सिंह ने फोन पर डॉक्टर से कहा कि रिपोर्ट उन्होंने खुद देख ली है और एलेक्सा ने भी सब बता दिया है। इस पर जब डॉक्टर ने पूछा कि 'मुझे बताओ यह एलेक्सा कौन है? ', तो पवन सिंह ने हंसते हुए जवाब दिया, 'अब हमको क्या पता सर कि एलेक्सा मौसी हैं, चाची हैं या भौजी हैं!' यह सुनते ही कमरे में मौजूद सभी लोग जोर-जोर से हंस पड़े।

2 अगस्त से जियोहॉटस्टार पर शुरू होगा 'भोजपुरी बवाल'

पवन सिंह का यह पूरा वाकया उनके नए शो 'भोजपुरी बवाल' के दौरान का है। यह शो 2 अगस्त से विशेष रूप से जियोहॉटस्टार पर स्ट्रीम किया जाएगा। इसमें दर्शकों को भोजपुरी इंडस्ट्री के सितारों के काम और निजी जिंदगी से जुड़े कई मजेदार पल देखने को मिलेंगे।

काला चश्मा पहनकर पूजा करने पर ट्रोल हुईं भूमि पेडनेकर : सावन में शिवलिंग पर जल चढ़ाने पहुंची; गॉगल्स ना उतारने पर नाराज हुए लोग

अभिनेत्री भूमि पेडनेकर अपने एक मंदिर दौरे के वीडियो को लेकर सोशल मीडिया पर ट्रोल्स के निशाने पर आ गई हैं। सावन महीने की शुरुआत पर भूमि एक शिव मंदिर में पूजा-अर्चना करने और शिवलिंग पर जल चढ़ाने पहुंची थीं। इस दौरान उनके काले चश्मे (सनग्लासेज) पहनने पर सोशल मीडिया यूजर्स ने सवाल उठाए हैं। भूमि ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर मंदिर की तस्वीरें और वीडियो पोस्ट की थीं, जिसके बाद कमेंट सेक्शन में कई लोगों ने पूजा में सनग्लासेज पहनने को गलत बताया। भूमि पेडनेकर ने गुरुवार को अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर मंदिर यात्रा का वीडियो और फोटो शेयर किए थे। इसमें वे ब्लैक टॉप और ब्लू डेनिम जींस में नजर आ रही हैं। उन्होंने आंखों पर काला चश्मा लगा रखा है और शिवलिंग पर जल अर्पित कर रही हैं। पोस्ट के कैप्शन में भूमि ने लिखा, 'सावन की शुरुआत के साथ, मैं आसान जीवन की नहीं, बल्कि इसे सम्मान के साथ जीने की ताकत मांगती हूं। हर हर महादेव। ' भूमि के इस वीडियो पर कई लोगों ने उनकी भक्ति की तारीफ की, तो वहीं ज्यादातर यूजर्स ने चश्मा पहनकर जलाभिषेक करने पर आपत्ति जताई।

11 साल पहले लीक हुई मेडिकल एंट्रेंस परीक्षा को याद कर भावुक हुईं मानुषी छिल्लर, बोलीं- 'तंग पीजी कमरों में..'

हाल ही में नेट पेपर लीक मामले पर देशभर में छात्रों ने विरोध प्रदर्शन किया था। आम स्टूडेंट्स के साथ कुछ सेलेब्स भी इसमें शामिल हुए थे। वहीं कुछ ने सोशल मीडिया के जरिए इसका समर्थन किया था। अब अभिनेत्री और कभी डॉक्टर रहीं मानुषी छिल्लर ने 2015 का वो भावनात्मक किस्सा साझा किया है जब पेपर लीक होने के बाद उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ा था।

एक्ट्रेस ने 2015 में दी थी परीक्षा

मानुषी हाल ही में मनोचिकित्सक डॉ. अंजली छाबड़िया के साथ सोहा अली खान के पॉडकास्ट पर पहुंचीं। जहां सोहा ने 2015 में लीक हुए मेडिकल परीक्षा की बात छेड़ी तब एक्ट्रेस ने बताया कि इतनी मेहनत करने के बाद

उन्हें कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। मनुषी ने कहा, 'इस बात के दो पहलू हैं। एक मेरा व्यक्तिगत, दूसरा अधिकांश छात्रों का। मेरे माता- पिता इस चीज से गुजर चुके थे इसीलिए मैं मानसिक रूप से इसके लिए तैयार थी। मुझे इसके लिए अपनी हॉबी और कई चीजें छोड़नी पड़ीं क्योंकि इस एग्जाम के लिए मुझे पूरी तरह अपना ध्यान केंद्रित करना था।' अपने अनुभव साझा करते हुए मानुषी ने कहा, 'उस वक्त मेरे लिए यह काफी मुश्किल था। मगर फिर भी मुझे एहसास था कि बाकी छात्रों की स्थिति के मुकाबले मैं बेहतर ही थी। मैं ऐसे छात्रों से मिली जिनके माता-पिता ने उन्हें कोचिंग सेंटर भेजने के लिए अपनी हैसियत से ज्यादा कर्ज लिया था। कई छात्र पढ़ाई के लिए अपना शहर बदल चुके थे, तंग पीजी कमरों में रहते थे और हर दिन एक ही परीक्षा की तैयारी में बिताते थे।' एम.बी.बी.एस की प्रारंभिक परिक्षा के बारे में बात करते हुए मनुषी छिल्लर ने कहा, ' जब आपको बताया जाता है कि महीनों की तैयारी के बाद आपको अगले 45 दिनों तक और तैयारी करनी होगी.

पंजाब के मुख्यमंत्री बताएं कितनी घोषणाएं पूरी हुई : नायब सिंह सैनी

संवाददाता

चंडीगढ़ । हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने पंजाब के मुख्यमंत्री से सवाल किया कि वे प्रदेश की जनता को बताएं कि पिछले विधानसभा चुनाव में की गई 56 घोषणाओं में से कितनी पूरी हुई हैं , अगले चुनाव होने में मात्र 4 माह शेष हैं क्या वे सभी घोषणाओं को पूरा कर देंगे। श्री सैनी आज पंजाब के सनौर में सरदार उधम सिंह जी के 87वें शहीदी दिवस पर आयोजित समारोह में बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने सरदार उधम सिंह को नमन करते हुए कहा कि पंजाब में भाजपा सरकार ही सरदार उधम सिंह द्वारा युवाओं के विकास के लिए देखे गए सपनों को पूरा कर सकती है। उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री पर तंज कसते हुए कहा कि केवल नारों से नहीं नियत से राज्य का विकास होता है। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने पंजाब में एक्साइज इंस्पेक्टर की भर्ती में गड़बड़ी होने का आरोप लगाते हुए

'आप सरकार' को घेरा और इसे प्रतिभावान युवाओं के साथ बहुत बड़ा धोखा बताया। उन्होंने कार्यक्रम में एक वक्ता द्वारा 'पंजाब सरकार ने 30 प्रतिशत चुनावी वायदे पूरे किये' का हवाला देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंह मान बताएं कि उन्होंने गत चुनाव में की गई कितनी घोषणाओं को पूरा कर लिया है ? और क्या शेष 4 माह में बाकी घोषणाओं को पूरा कर देंगे ? श्री सैनी ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आज विरासत पर गर्व करते हुए विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। हरियाणा में हमारी सरकार इसी भावना पर काम कर रही है। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा किसानों , महिलाओं तथा युवाओं के हित में किए जा रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा ने अपने चुनावी संकल्प -पत्र में 217 संकल्प लिए थे जिनमें से 70 संकल्प तो मात्र डेढ़ साल में ही पूरे कर दिए हैं , बाकि के 147 संकल्प भी बहुत जल्द पूरे कर देंगे। उन्होंने पंजाब की जनता को शहीद सरदार उधम सिंह जी के आदर्शों पर चलने का आह्वान किया और कहा कि भाजपा ही एकमात्र ऐसी पार्टी है जो महापुरुषों का सम्मान कर

देश को विकसित और संस्कारित करने की दिशा में काम कर रही है। श्री नायब सिंह सैनी ने सनौर को पावन धरती बताया और कहा कि कुछ धरतियाँ केवल इतिहास का हिस्सा बनती हैं... लेकिन कुछ धरतियाँ इतिहास गढ़ती हैं। सनौर ऐसी ही पुण्यभूमि है। यह केवल एक कस्बा नहीं है, केवल एक क्षेत्र नहीं है; यह राष्ट्रभक्ति की राजधानी है। इस धरती की हर मुट्ठी हमें याद दिलाती है कि आज़ादी हमें विरासत में नहीं मिली, बल्कि गुरुओं के तप, वीरों के पराक्रम और शहीदों के बलिदान से मिली है। उन्होंने सरदार उधम सिंह के जीवन चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उनकी राष्ट्रभक्ति से अवगत करवाया कि किस प्रकार से सरदार उधम सिंह ने जलियांवाला हत्याकांड के दोषी अंग्रेज अफसर डायर को लंदन जाकर मारा था।

उधम सिंह जी ने अंग्रेज़ जनता और अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद में फ़र्क़ किया। उनकी लड़ाई किसी धर्म, किसी जाति, किसी देश की जनता से नहीं थी बल्कि अन्याय के ख़िलाफ़ थी। श्री नायब सिंह सैनी ने पंजाब की जनता में जोश भरते हुए कहा कि एक उधम सिंह ने इक्कीस वर्षों तक अपना संकल्प निभाया और एक साम्राज्य की

-कहा ,भाजपा करेगी सरदार उधम सिंह के सपनों को पूरा

-पंजाब के सनौर में सरदार उधम सिंह जी के 87वें शहीदी दिवस में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की

नींव हिला दी। आज अगर साढ़े तीन करोड़ पंजाबी अपने संकल्प निभा लें, तो पंजाब की तकदीर बदलने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री श्रीमती परनीत कौर , कार्यक्रम के आयोजक श्री हरदीप सिंह कंबोज, बाबा ब्रह्मदास जी महाराज , स्वामी राजेश्वरानंद महाराज , संत महेश मुनि जी महाराज समेत अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्पोर्टस, फिटनेस एक्सपो में हरियाणा के पैवेलियन की धूम, हरियाणवी खिलाड़ियों की प्रतिभा का राज पूछ रहे लोग

संवाददाता

चण्डीगढ़ । नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित किए गए स्पोर्टस, फिटनेस और इन्फ्रास्ट्रक्चर एक्सपो में बनाए गए हरियाणा पैवेलियन को लोगों द्वारा काफी पसंद किया जा रहा है। इस एक्सपो में पहुंच रहे युवा हरियाणा से जुड़े खिलाड़ियों की प्रतिभा का राज पूछ रहे हैं। इसके साथ-साथ हरियाणा सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं को भी जान रहे हैं। हरियाणा खेल विभाग के प्रवक्ता ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि पैवेलियन में बड़ी संख्या में आगंतुक पहुंच रहे हैं। इनमें खिलाड़ी, युवा और कोच शामिल हैं। सभी हरियाणा सरकार द्वारा दी जा रही विभिन्न सुविधाओं के बारे में जानकारी ले रहे हैं और खिलाड़ियों द्वारा की जाने वाली तैयारी के संबंध में जान रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा उन्हें पैवेलियन संभालने की जिम्मेदारी मिली है, जो उनके लिए बड़े ही गर्व की बात है। सरकार द्वारा खेल विभाग के माध्यम से खिलाड़ियों को बहुत अच्छी सुविधाएं दी जा रही हैं, जिसे जानने के बाद आगंतुक हरियाणा

भारत मंडपम में आयोजित किए गए स्पोर्टस फिटनेस और इन्फ्रास्ट्रक्चर एक्सपो में बड़ी संख्या में पहुंचे लोग

सरकार की प्रशंसा कर रहे हैं।

***प्रदेश की खेल नीतियों से खिलाड़ियों को मिल रहा लाभ**

प्रवक्ता ने बताया कि प्रदेश सरकार ने प्रदेश में खेल संस्कृति को मजबूत करने तथा खिलाड़ियों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से खेल नीतियां लागू की हैं। इन नीतियों से प्रदेश के खिलाड़ियों को आर्थिक सुरक्षा, रोजगार, प्रशिक्षण एवं खेल सुविधाओं का बड़ा लाभ मिला है। प्रदेश सरकार ने खिलाड़ियों को सम्मानजनक रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वर्ष 2014 से अब तक उत्कृष्ट खिलाड़ियों को विभिन्न सरकारी विभागों में श्रेणी-ए, बी और सी कैटेगरी में सीधी नियुक्तियां प्रदान की हैं।

***2014 से अब तक 721 करोड़ रुपये से अधिक की पुरस्कार राशि वितरित**

उन्होंने बताया कि हरियाणा सरकार द्वारा वर्ष 2014 से खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत सम्मानित किया जा रहा है। अब तक 17 हजार से अधिक खिलाड़ियों को लाभ मिला है, जिसके तहत 721.20 करोड़ रुपये से अधिक की पुरस्कार राशि वितरित की जा चुकी है। यह योजना खिलाड़ियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। प्रदेश में खेल सुविधाओं को मजबूत करने के लिए राज्य सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर खेल अवसंरचना विकसित की गई है। प्रदेश में वर्तमान में 3 राज्य स्तरीय खेल परिसर, 21 जिला स्तरीय खेल परिसर, 25 उपमंडल स्तरीय खेल परिसर, 163 राजीव गांधी खेल परिसर, 245 मिनी ग्रामीण स्टेडियम संचालित किए जा रहे हैं। इन खेल परिसरों से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के खिलाड़ियों को गुणवत्तापूर्ण खेल सुविधाएं उपलब्ध हो रही हैं।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने शहीद उधम सिंह जी के शहादत दिवस पर किया नमन

चंडीगढ़ । (संवाददाता) हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने महान स्वतंत्रता सेनानी और अदम्य साहस के प्रतीक शहीद उधम सिंह जी के शहादत दिवस पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और नमन किया। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने अपने सरकारी आवास पर यहां संत कबीर कुटीर में शहीद उधम सिंह जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें याद किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि शहीद उधम सिंह जी का अदम्य साहस, अटूट राष्ट्रभक्ति और मातृभूमि के स्वाभिमान के लिए दिया गया सर्वोच्च बलिदान भारतीय इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में दर्ज एक अमर अध्याय है। शहीद की शहादत को नमन करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, 'राष्ट्र उनकी वीरता, समर्पण और महान त्याग का सदैव कृतज्ञ रहेगा। जालियांवाला बाग हत्याकांड के न्याय के लिए उन्होंने जिस प्रकार का संकल्प और धैर्य दिखाया, वह अतुलनीय है। ' उन्होंने आगे कहा कि शहीद उधम सिंह जी का जीवन चरित्र और उनके विचार आने वाली पीढ़ियों को हमेशा देशभक्ति, त्याग और राष्ट्र सेवा के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें ऐसे महान क्रांतिकारियों के आदर्शों को अपने जीवन में ढालकर देश और प्रदेश की उन्नति के लिए कार्य करना चाहिए।

9.75 करोड़ रुपए की लागत से मजबूत होगी अम्बाला छावनी की 10 सड़कें : ऊर्जा मंत्री अनिल विज

चंडीगढ़ । हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री श्री अनिल विज ने कहा कि अम्बाला छावनी में सड़कों को अधिक मजबूत और आधुनिक बनाने के लिए करोड़ों रुपए की लागत से 10 महत्वपूर्ण सड़कों की मरम्मत होगी, जिससे लाखों वाहन चालकों को लाभ मिलेगा। सड़कें मजबूत होने से अम्बाला छावनी के विकास को गति मिलेगी, साथ ही नागरिकों का जीवन स्तर और सुधरेगा। श्री विज ने बताया कि 9.75 करोड़ रुपए की लागत से छावनी के विभिन्न क्षेत्रों में 10 सड़कों की मरम्मत के लिए राज्य सरकार से मंजूरी प्राप्त हो चुकी है। उन्होंने बताया कि बहुत जल्द सड़कों की मरम्मत के लिए पीडब्ल्यूडी द्वारा टेंडर लगाए जाएंगे जिससे आगे कार्य शुरू हो सके। ऊर्जा मंत्री ने बताया कि नन्हेड़ा, रंगिया मंडी, मच्छैंडा, चंद्रपुरी, रामगढ़ माजरा, दलीपगढ़, पंजोखरा साहिब, मंडौर, धूलकोट, मुनरहेड़ी आदि इलाकों में सड़कों की मरम्मत की जाएगी।

अशोका एक्सप्रेस की बेवसाईड से जुड़ने के लिए दिए गए QR कोड को स्केन करे।

अशोका एक्सप्रेस
राष्ट्रीय हिन्दी समाचार-पत्र
प्रिय पाठक, विज्ञापन दात्ता,
आप अपने क्षेत्र की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्य तथा धार्मिक लेख, कविता एवं कार्टून लिख भेजें। व्हाट्सएप या ईमेल पर आपके द्वारा भेजी गई सामग्री सुव्यवस्थित ढंग से प्रकाशित किया जायेगा।
नोट: पूर्व प्रकाशित लेखो को न भेजे।
संपादक: विजय कुमार
Website: https://ashokaexpress.com/, Email:-ashoka.express@live.com, Mobile No. 9810674206
अशोका एक्सप्रेस को आर्थिक योगदान भी कर सकते है।
Account Holder Name : ASHOKA EXPRESS
Bank Account No. : 10650995502 & 41856402452
IFSC Code : SBIN0004846
UPI ID : 9810674206@sbi

'पेलेट गन क्या होती है जनता को नहीं पता', पूर्व एसीपी ने संसद में दिए गए बयानों पर उठाए सवाल

दिल्ली । दिल्ली पुलिस महासंघ ने शुक्रवार को एक प्रेस वार्ता आयोजित की। इसमें पूर्व एसीपी केपी कुकरेती ने संसद में बैठे नेताओं के पुलिस कार्रवाई संबंधी बयानों पर आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि ये नेता पुलिस अधिकारी या कानूनी विशेषज्ञ नहीं हैं। कुकरेती ने केंद्रीय गृह मंत्री को सीधे जिम्मेदार ठहराने वाले बयानों को पूरी तरह गलत बताया। उन्होंने पेलेट गन के बारे में जनता में फैलाई जा रही गलतफहमी को भी दूर किया। कुकरेती ने स्पष्ट किया कि आम जनता को पेलेट गन की सही जानकारी नहीं है। उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री को सीधे तौर पर जिम्मेदार ठहराना भ्रामक बताया। पूर्व एसीपी ने छात्रों के सांविधानिक और मौलिक अधिकारों का समर्थन किया। उन्होंने स्वीकार किया कि विरोध प्रदर्शन होते हैं और होने भी चाहिए। हालांकि, उन्होंने भीड़ नियंत्रण को एक अलग विषय बताया। कुकरेती ने कहा कि भीड़ को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। लेकिन जब भीड़ हिंसक और अनियंत्रित हो जाती है, तो स्थिति बदल जाती है। कुकरेती ने बताया कि जब कोई भीड़ हिंसक हो जाती है, तो उसका हर सदस्य जिम्मेदार होता है। उन्होंने कहा कि जब भीड़ उन्मादी होकर पत्थर, लाठी और अन्य वस्तुएं फेंकती है। बैरिकेड तोड़ती है और धारा 163 की चेतावनियों को नजरअंदाज करती है। ऐसे में पुलिस के पास बहुत कम विकल्प बचते हैं। उन्होंने कहा कि चरम परिस्थितियों में गोलीबारी अपरिहार्य हो सकती है और कानून भी इसकी अनुमति देता है। पूर्व एसीपी ने जोर देकर कहा कि जब किसी पुलिस अधिकारी का जीवन सीधे खतरे में होता है। तब उन्हें मौके पर आवश्यक कार्रवाई करने का अधिकार होता है। ऐसे समय में राज्यपाल, मुख्यमंत्री या गृह मंत्री मौके पर मौजूद नहीं होते हैं। जमीन पर मौजूद वरिष्ठ अधिकारी को अपनी जान, जनता और सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा का निर्णय लेना होता है। कुकरेती ने संसद पर लोगों का हमला करना अराजकता का सबसे बड़ा कार्य बताया।

संसद परिसर में साधु के भेष में प्रदर्शन पर नया विवादः संत समाज ने क्यों जताई नाराजगी, स्पीकर से क्या मांग की?

नई दिल्ली। संसद भवन के मकर द्वार पर विपक्ष के प्रदर्शन पर संत समाज ने नाराजगी जताई है। अखिल भारतीय संत समिति के महामंत्री जितेंद्रानंद सरस्वती ने इसे साधु-संतों और भगवा वस्त्र का अपमान बताया। उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष के कार्रवाई की मांग की। दरअसल, विपक्षी सांसदों ने राम मंदिर में कथित चढ़ावा चोरी के मुद्दे पर आज संसद के मकर द्वार पर विरोध प्रदर्शन किया। इसमें भगवा वस्त्र पहने सांसद पप्पू यादव प्रतीकात्मक रूप से चढ़ावा बटोरते नजर आए। जबकि कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष व लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी समेत कई सांसद चढ़ावा चढ़ाते नजर आए। इस दौरान कई अन्य विपक्षी सांसद भी मौजूद रहे।

अखिल भारतीय संत समिति ने क्या कहा?

साधुओं के भेष में विपक्ष के प्रदर्शन पर अखिल भारतीय संत समिति के महामंत्री जितेंद्रानंद सरस्वती ने आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि किसी भी राजनीतिक दल को सरकार या भाजपा का अधिकार है। लेकिन साधु-संतों क वेशभूषा का

उपयोग कर पूरे संत समाज पर चोरी का आरोप लगाने जैसा संदेश अनुचित है। जितेंद्रानंद सरस्वती ने आरोप लगाया कि इस तरह का प्रदर्शन संत परंपरा और भगवा वस्त्र की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाला है। उन्होंने कहा, अगर इस मामले में बिना शर्त सार्वजनिक माफी नहीं मांगी जाती है तो लोकसभा अध्यक्ष को इस पूरे घटनाक्रम का संज्ञान लेना चाहिए और उचित कार्रवाई करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राम मंदिर से जुड़े कथित चढ़ावा चोरी मामले की जांच संबंधित एजेंसियां कर रही है। जो भी कानूनी फैसला होगा, संत समाज उसे स्वीकार करेगा। सरस्वती ने दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग भी दोहराई।

साक्षी महाराज ने क्या कहा?

इस प्रदर्शन को लेकर भाजपा सांसद साक्षी महाराज ने भी विपक्ष पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, देश की आजादी से लेकर विभाजन तक और विभाजन से आज तक कांग्रेस और अब प्रियंका गांधी, राहुल गांधी और पूरा विपक्ष लगातार संतों, भगवा और सनातन का अपमान करता आया है। साक्षी महाराज ने कहा, जिस तरह इन्होंने अपने प्रदर्शन में भगवान राम और चढ़ावे के मुद्दे को शामिल करके सनातन का अपमान करने की कोशिश की और कालनेमि जैसा अभिनय किया, वह निंदनीय है। उन्होंने कहा, विपक्ष ने सनातन का अपमान किया है। लोकसभा अध्यक्ष को इस तरह की हरकतों पर जरूर कार्रवाई करनी चाहिए।

हरियाणा में एक्सटेंशन-गेस्ट लेक्चरर्स को मिलेगी सेवा सुरक्षा, सरकार ने जारी किए ड्राफ्ट नियम

चंडीगढ़ । हरियाणा सरकार ने सरकारी कॉलेजों में कार्यरत एक्सटेंशन और गेस्ट लेक्चरर्स को सेवा सुरक्षा देने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। उच्च शिक्षा विभाग ने हरियाणा एक्सटेंशन लेक्चरर्स एवं गेस्ट लेक्चरर्स (सिक्योरिटी ऑफ सर्विस) नियम, 2026 का ड्राफ्ट सार्वजनिक कर दिया है। इन नियमों के लागू होने के बाद पात्र लेक्चरर्स की सेवा शर्तें, वेतन, अवकाश, स्थानांतरण और आचरण संबंधी प्रावधान स्पष्ट हो जाएंगे। विभाग ने ड्राफ्ट पर आम जनता और संबंधित हितधारकों से 15 दिनों के भीतर सुझाव और आपत्तियां मांगी हैं। ड्राफ्ट नियमों के अनुसार, वे एक्सटेंशन और गेस्ट लेक्चरर्स, जिन्होंने सरकारी कॉलेजों में कम से कम पांच वर्ष की सेवा पूरी की है तथा प्रत्येक वर्ष 240 दिन का मानदेय प्राप्त किया है, उन्हें सेवा सुरक्षा का लाभ मिलेगा। इसके लिए सरकार एकसमर्पित ऑनलाइन पोर्टल भी विकसित करेगी, जहां पात्र लेक्चरर्स अपनी जानकारी अपलोड करेंगे। संबंधित कॉलेज के प्राचार्य और डीडीओ द्वारा सत्यापन के बाद उन्हें सेवा सुरक्षा का दर्जा दिया जाएगा। ड्राफ्ट में ऐसे कर्मचारियों के री-एडजस्टमेंट का भी प्रावधान किया गया है जो किसी कॉलेज में सरप्लस हो जाते हैं। यदि किसी विषय में आवश्यकता से अधिक सुरक्षित कर्मचारी हैं, तो उनकी सूची निदेशालय को भेजी जाएगी और उन्हें आवश्यकता वाले दूसरे सरकारी कॉलेजों में समायोजित किया जाएगा। महिला कर्मचारियों को विवाह के बाद दूसरे जिले में समायोजन के लिए आवेदन करने की सुविधा दी गई है। इसी तरह गंभीर या पुरानी बीमारी से पीड़ित कर्मचारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी के प्रमाण-पत्र के आधार पर स्थानांतरण का अनुरोध कर सकेंगे। पारिवारिक परिस्थितियों या जीवनसाथी की मृत्यु जैसे मामलों में भी री-एडजस्टमेंट का प्रावधान रखा गया है। आवश्यकता पड़ने पर निदेशालय स्वयं भी किसी सुरक्षित कर्मचारी को दूसरे सरकारी कॉलेज में तैनात कर सकेगा। ड्राफ्ट नियमों के तहत पात्र कर्मचारियों को 57,700 रुपये मासिक वेतन, हर वर्ष 2 प्रतिशत वार्षिक वेतन वृद्धि तथा राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर घोषित महंगाई भत्ता (डीए) देने का प्रस्ताव है। महिला कर्मचारियों को छह माह का मातृत्व अवकाश और पुरुष कर्मचारियों को 15 दिन का पितृत्व अवकाश मिलेगा। इसके अलावा यदि किसी कर्मचारी को पागल जानवर काट लेता है तो एंटी-रेबीज उपचार के लिए अधिकतम पांच दिन का विशेष आकस्मिक अवकाश भी दिया जा सकेगा, जिसके लिए अधिकृत चिकित्सा अधिकारी का प्रमाण-पत्र आवश्यक होगा। ड्राफ्ट नियमों में कर्मचारियों के आचरण से जुड़े विस्तृत प्रावधान भी शामिल किए गए हैं। इनमें राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने, हड़ताल करने, सरकारी कार्यों की अनुचित आलोचना करने या निजी व्यापार एवं अन्य नौकरी करने पर प्रतिबंध का प्रावधान रखा गया है। उच्च शिक्षा विभाग का कहना है कि निर्धारित अवधि में प्राप्त सभी सुझावों और आपत्तियों पर विचार करने के बाद नियमों को अंतिम रूप दिया जाएगा।

जल संरक्षण का संदेश देती पुस्तक 'एक बूँद सौ सवाल' का हुआ विमोचन

चंडीगढ़।

हरियाणा निवास चंडीगढ़ में आयोजित कार्यक्रम में सूचना, जनसंपर्क, भाषा एवं संस्कृति विभाग के आयुक्त एवं सचिव डॉ. अमित कुमार अग्रवाल ने आज बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। इस अवसर पर उन्होंने प्रसिद्ध लेखिका डा. शमीम शर्मा और उनकी पुत्रवधू डा. सरिता शर्मा द्वारा संयुक्त रूप से लिखित पुस्तक 'एक बूँद सौ सवाल' का विमोचन किया और दोनों लेखिकाओं को इस अनुपम कृति के लिए बधाई दी। डॉ. अग्रवाल ने पुस्तक की सराहना करते हुए कहा कि इसमें पानी के सभी आयामों ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और पर्यावरण को बेहद सरल और सुंदर शैली में पिरोया गया है। यह पुस्तक हर आयु वर्ग के लिए अत्यंत पठनीय और उपयोगी है। उन्होंने बताया कि इस पुस्तक से प्रेरणा लेते हुए उन्होंने हाल ही में उद्योग विभाग की बैठक में एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। अब राज्य में किसी भी नए इंडस्ट्रियल प्रोजेक्ट या पार्क की मंजूरी से पहले जल की उपलब्धता और उसकी व्यावहारिकता का आकलन अनिवार्य कर दिया गया है। साथ ही,

औद्योगिक इकाइयों के लिए जल का संरक्षण जरूरी है, ताकि भूमिगत जल दोहन को रोका जा सके। उन्होंने कहा कि हरियाणा एक अर्ध-शुष्क प्रदेश है, जहां जल का हमेशा से सांस्कृतिक और वैज्ञानिक महत्व रहा है। हमारी पुरानी परंपराओं (जैसे कुआँ-पूजन) और स्वच्छता के नियमों को धर्म से इसलिए जोड़ा गया था ताकि लोग पानी को प्रदूषित न करें और जलजनित बीमारियों से सुरक्षित रहें। डॉ. अग्रवाल ने कहा कि आज युवाओं की भाषा में एक शून्यता आ गई है। अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व का बोध होना बेहद जरूरी है। हिंदी देश को जोड़ने वाली प्रमुख भाषा है और इसे सहेजने के लिए 'एक बूँद सौ सवाल' जैसी सरल, गुणवत्तापूर्ण और व्यावहारिक पुस्तकों का अधिक से अधिक सृजन होना चाहिए। इस दौरान कार्यक्रम को संबोधित करते हुए दैनिक ट्रिब्यून के संपादक श्री नरेश कौशल ने कहा कि साहित्य अभिव्यक्ति नहीं, सामाजिक परिवर्तन का साधन है। कहानी, कविता, व्यंग्य, आत्मकथा, स्त्री विमर्श और हरियाणवी हास्य साहित्य हर विधा में डा. शमीम ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। उनकी लेखनी ने नारी अस्मिता, कन्या भ्रूण हत्या, सामाजिक विसंगतियों, ग्रामीण जीवन, पारिवारिक संबंधों और मानवीय मूल्यों को अत्यंत सहज किन्तु प्रभावशाली स्वर प्रदान किया है। हरियाणवी भाषा को साहित्यिक गरिमा प्रदान करने में उनका योगदान

सूचना, जनसंपर्क, भाषा एवं संस्कृति विभाग के आयुक्त एवं सचिव डॉ. अमित कुमार अग्रवाल ने किया विमोचन

अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व का बोध होना बेहद ज़रूरी- डा. अग्रवाल

विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस कार्यक्रम में उर्दू प्रकोष्ठ हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, पंचकूला के निदेशक ने बतौर विशिष्ट अतिथि शिरकत की और दोनों लेखिकाओं को बधाई देते हुए कहा कि उन्होंने जल जैसे समसामायिक विषय पर पुस्तक लेखन का कार्य किया है, जो कि सराहनीय है। हम सभी को जल बचाने पर विशेष ध्यान देना होगा।

इस मौके पर पुस्तक की लेखिका डा. शमीम शर्मा ने कहा कि पुस्तक में जल संरक्षण से जुड़े 49 अध्याय हैं। जल बचाना आज की जरूरत है। इसी को ध्यान में रखते हुए पुस्तक की रचना की गई है।

संसदः विपक्ष के हंगामे के बीच लोकसभा से जन्म-मृत्यु पंजीकरण संशोधन विधेयक पारित

नई दिल्ली। संसद के मानसून सत्र के 10वें दिन विपक्ष ने दोनों सदनों में जोरदार हंगामा किया। विपक्ष 20 जुलाई को संसद मार्च के दौरान छात्रों पर हुई कथित पुलिस कार्रवाई को लेकर चर्चा की मांग और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से जवाबदेही की मांग करता रहा। हालांकि, इस बीच लोकसभा ने जन्म और मृत्यु पंजीकरण (संशोधन) विधेयक, 2026 पारित कर दिया। यह विधेयक बिना किसी चर्चा के मंजूर हुआ। दोपहर 12 बजे सदन की कार्यवाही दोबारा शुरू होने के बाद भाजपा सांसद दिलीप सैकिया की अध्यक्षता में विधेयक को चर्चा और मंजूरी के लिए पेश किया गया। विपक्षी सांसदों की नारेबाजी के बीच इसे ध्वनि मत से पारित कर दिया गया। इस दौरान कई विपक्षी सांसद सदन के बीचों-बीच पहुंच गए और गृह मंत्री अमित शाह की सदन में मौजूदगी की मांग करने लगे। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने चर्चा में हिस्सा नहीं लेने को लेकर विपक्ष पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि सरकार इस अहम विधेयक पर चर्चा चाहती थी। रिजिजू ने कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। भविष्य में ऐसा दोबारा नहीं होना चाहिए। जिन लोगों ने आपको संसद भेजा है, वे आपसे जवाब मांगेंगे। उन्होंने विपक्षी सांसदों से अपील की कि वे भविष्य में विधेयकों पर चर्चा में हिस्सा लें, न कि सदन की कार्यवाही बाधित करें। दिलीप सैकिया ने भी कहा कि विपक्ष के सहयोग के बिना विधेयक पारित होना दुर्भाग्यपूर्ण है। विधेयक पारित होने के तुरंत बाद सदन की कार्यवाही पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। यह विधेयक जन्म और मृत्यु

पंजीकरण अधिनियम, 1969 के कुछ प्रावधानों में बदलाव करता है। इसका उद्देश्य जन्म और मृत्यु जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं की समय पर जानकारी दर्ज कराने को बढ़ावा देना है। विधेयक में देरी से जन्म और मृत्यु का पंजीकरण कराने के नियमों को सख्त किया गया है। अब घटना के दो साल से ज्यादा समय बाद पंजीकरण कराने के लिए प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट के आदेश की जरूरत होगी। मौजूदा कानून में एक साल से ज्यादा देरी होने पर जिला मजिस्ट्रेट, उप-विभागीय मजिस्ट्रेट या अधिकृत कार्यकारी मजिस्ट्रेट के आदेश की जरूरत होती है। नए कानून में दो साल तक की देरी के लिए यही व्यवस्था जारी रहेगी। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 20 जुलाई को इस विधेयक को पेश करने की मंजूरी दी थी।

इसमें 2023 में मूल कानून में किए गए बदलावों के बाद देरी से पंजीकरण की प्रक्रिया में और सुधार का प्रस्ताव रखा गया है। विधेयक में कानूनी परिभाषाओं में भी बदलाव किया गया है। इसमें 'कार्यकारी मजिस्ट्रेट' शब्द को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 के अनुसार बदला गया है। पहले इसमें 1973 की आपराधिक प्रक्रिया संहिता का संदर्भ दिया जाता था। लोकसभा से विधेयक पारित होने के बाद सरकार ने मानसून सत्र में हंगामे के बीच एक और विधेयक पारित करा लिया है। अब तक इस सत्र में दो विधेयक लोक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) संशोधन विधेयक, 2026 और राष्ट्रीय सम्मान के अपमान की रोकथाम (संशोधन) विधेयक, 2026 संसद के दोनों सदनों से मंजूर हो चुके हैं। जन्म और मृत्यु पंजीकरण (संशोधन) विधेयक, 2026 को अब राज्यसभा की मंजूरी मिलना बाकी है। सदन की कार्यवाही के दौरान भाजपा सांसद अपराजिता सारंगी की अध्यक्षता वाली संयुक्त संसदीय समिति को रिपोर्ट देने के लिए और समय दे दिया गया। यह समिति संविधान (130वां संशोधन) विधेयक, 2025 की जांच कर रही है। अब समिति अपनी रिपोर्ट शीतकालीन सत्र के आखिरी सप्ताह के पहले दिन तक पेश कर सकती है।

एलपीजी से तत्काल टिकट तक.... आज से बदल जाएंगे कई नियम, आपकी जेब पर पड़ेगा सीधा असर

नई दिल्ली । अगस्त महीने की शुरुआत के साथ ही कई बदलाव होने जा रहे हैं। इनका सीधा असर आपकी जेब और रोजमर्रा की जिंदगी पर पड़ सकता है। एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में बदलाव, रेलवे के तत्काल टिकट बुकिंग नियम, आयकर रिटर्न से जुड़े नियम, बैंकिंग सेवाओं के शुल्क और CKYC 2.0 जैसे कई बदलाव इस सूची में शामिल हैं। जानिए कल से क्या-क्या बदलेगा।
हर महीने की पहली तारीख को सरकारी तेल विपणन कंपनियां घरेलू और कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की कीमतों की समीक्षा करती हैं। ऐसे में 1 अगस्त 2026 को भी नए रेट जारी किए जाएंगे। तेल कंपनियों ने 1 जुलाई को 19 किलो वाले कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 183.50 रुपए की कटौती की थी। इस साल पहली बार रेट घटाए गए थे। इसी के साथ 5 किलो वाले छोटू सिलेंडर की कीमत में भी 13 रुपए की कटौती की गई थी। रेलवे रिजर्वेशन काउंटर पर तत्काल ट्रेन टिकट बुक करने वाले यात्रियों को अब लंबी लाइनों में इंतजार नहीं करना पड़ेगा। वेस्ट सेंट्रल रेलवे 1 अगस्त से टोकन-बेस्ड सिस्टम शुरू करने जा रहा है। इसका मकसद

बुकिंग प्रोसेस को आसान बनाना, भीड़ को बेहतर ढंग से मैनेज करना और काउंटर पर पारदर्शिता बढ़ाना है। नई व्यवस्था के तहत, यात्रियों को तत्काल बुकिंग शुरू होने से पहले लंबी लाइनों में खड़े होने के बजाय, एक तय समय के अंदर टोकन लेना होगा।
टोकन मिलने के बाद, वे टिकट बुकिंग की प्रक्रिया पूरी करने के लिए अपने तय समय पर रिजर्वेशन काउंटर पर वापस आ सकते हैं। ईरान युद्ध शुरू होने के बाद से सरकार हर 15 दिन में इसकी समीक्षा करती है। 16 जुलाई को सरकार ने कच्चे तेल की बढ़ती कीमत के बीच डीजल और एविएशन टर्बाइन फ्यूल एक्सपोर्ट पर विंडफॉल टैक्स बढ़ाया था जबकि पेट्रोल के एक्सपोर्ट पर लेवी कम कर दी। विंडफॉल टैक्स ऐसी कंपनियों या इंडस्ट्री पर लगाया जाता है जिन्हें किसी खास तरह के हालात से तत्काल काफी फायदा होता है। कई बैंक 1 अगस्त से अपनी क्रेडिट कार्ड पॉलिसी में बदलाव कर रहे हैं। इनमें रिवॉर्ड पॉइंट सिस्टम, देर से पेमेंट करने पर लगने वाली फीस और सर्विस चार्ज में बदलाव शामिल हैं। फिक्स्ड डिपॉजिट पर मिलने वाले ब्याज की दरों और नए CKYC 2.0 सेंट्रल नियमों को भी लागू किया जा सकता है। आरबीआई की मॉनिटरी पॉलिसी कमिटी की बैठक 3 अगस्त से 5 अगस्त, 2026 तक होनी है। अगस्त से Central Know Your Customer (CKYC) 2.0 के दायरे का विस्तार भी किया जा सकता है। इस नए सिस्टम का उद्देश्य ग्राहकों को बार-बार अलग-अलग वित्तीय संस्थानों में KYC कराने की जरूरत को कम करना है। इसके तहत बैंक, बीमा कंपनियां और म्यूचुअल फंड संस्थान नियामकीय प्रावधानों के अनुसार केंद्रीय डेटाबेस से सत्यापित KYC रिकॉर्ड का उपयोग कर सकेंगे। हालांकि ग्राहकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनके नाम, पता, मोबाइल नंबर और पहचान संबंधी दस्तावेज सभी वित्तीय खातों में अपडेट हों, ताकि भविष्य में किसी तरह की परेशानी न हो।

पीवीसी आयात पर सरकारी पहरा, क्या फिर बिगड़ने वाला है आपके घर का बजट?

बोनस डेस्क । जल्द ही घर बनाना और भी महंगा होने वाला है। खेती के लिए पानी की पाइपलाइन बिछाना या घर की वायरिंग कराना आम आदमी के बजट को बढ़ाने वाला है। सरकार ने सस्ते विदेशी प्लास्टिक कच्चे माल पर नकेल कसने का फैसला किया है। लेकिन इस नीतिगत फैसले का सीधा झटका आम जनता की जेब पर लगने वाला है। विदेश व्यापार महानिदेशालय ने हाल ही में सस्पेंशन - ग्रेड पॉलीविनाइल क्लोराइड (एस-पीवीसी) रेजिन के आयात नियमों को सख्त कर दिया है। यह एक तरह का प्लास्टिक कच्चा माल है, जिसका इस्तेमाल घरों में इस्तेमाल होने वाले पानी के पाइप, बिजली के तारों की कोटिंग, खिड़कियों की फ्रेम, प्लास्टिक पैकिंग, कई चिकित्सा उत्पादों और यहां तक कि जूतों के सोल बनाने में होता है। विदेश व्यापार महानिदेशालय ने एस- पीवीसी रेजिन पर न्यूनतम आयात मूल्य 0.76 डॉलर (लगभग 64 रुपये) प्रति किलोग्राम या उससे कम कीमत वाले आयात के लिए लाइसेंस लेना अनिवार्य कर दिया है।

घरेलू कीमतें बढ़ने की आशंका

ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा कि इस कदम से घरेलू पीवीसी रेजिन की कीमतों में बढ़ोतरी की आशंका है।

भारत ने वित्त वर्ष 2025-26 में 1.63 अरब डॉलर का रेजिन आयात किया था। चीन सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता था, इसके बाद जापान, ताइवान, दक्षिण कोरिया, मेक्सिको, इंडोनेशिया, थाइलैंड, अमेरिका, सिंगापुर एवं वियतनाम का स्थान रहा। जीटीआरआई के मुताबिक, इन देशों से आयात की औसत कीमत 0.65 डॉलर से 0.75 डॉलर प्रति किलोग्राम के बीच रही, जो डीजीएफटी की तय राशि 0.76 डॉलर से कम है। ऐसे में मौजूदा आयात का बड़ा हिस्सा अब अंकुश के दायरे में आ जाएगा।

घर से लेकर खेत तक दिखेगा असर

घर बनाने में पीवीसी पाइप, फिटिंग और बिजली के तारों की बड़ी खपत होती है। जब कच्चा माल महंगा होगा, तो कंपनियां इसका बोझ सीधे ग्राहकों पर डालेंगी। खेती- किसानी और पानी की पाइपलाइनों में 70 से 80 फीसदी पीवीसी का इस्तेमाल होता है। पाइप महंगे होने से किसानों का बजट बिगड़ेगा। इस कच्चे माल का इस्तेमाल पैकेजिंग फिल्मों और आम जूतों-चप्पलों में भी होता है, जिससे दैनिक उपयोग की कई वस्तुएं महंगी हो सकती हैं।

छोटे उद्योगों के लिए बड़ा खतरा

भारत में पीवीसी पाइप और केवल बनाने वाली हजारों छोटी और मझोली इकाइयां हैं। सस्ता माल न मिलने से उत्पादन लागत बढ़ जाएगी। इसका असर दोतरफा होगा, या तो उत्पाद महंगे होंगे, या फिर कई छोटी इकाइयां बंद होने के कगार पर पहुंच जाएंगी। देश कुल जरूरत का 64 फीसदी एस-पीवीसी रेजिन आयात करता है।

सेंसेक्स 49 अंक चढ़ा; निफ्टी 24350 के करीब

मुंबई। घरेलू शेयर बाजार ने शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में मामूली बढ़त के साथ शुरुआत की। शुरुआती कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 49.91 अंक चढ़कर 77,970.95 अंक पर पहुंच गया। वहीं, एनएसई निफ्टी भी 28 अंक की बढ़त के साथ 24,343.65 अंक पर कारोबार कर रहा था। विदेशी निवेश बढ़ने और दुनियाभर में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट के कारण शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में रुपया मजबूत हुआ। डॉलर के मुकाबले रुपया 20 पैसे चढ़कर 95.30 के स्तर पर पहुंच गया। हालांकि, डॉलर के मजबूत होने से रुपये की बढ़त सीमित रही। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने यह जानकारी दी। विदेशी मुद्रा बाजार में रुपया 95.40 के स्तर पर खुला। बाद में इसमें मजबूती आई और यह 95.30 के स्तर पर पहुंच गया। यह पिछले कारोबारी बंद भाव के मुकाबले 20 पैसे की बढ़त है।
रुपया लगातार पांचवें कारोबारी सत्र में मजबूत हुआ है। गुरुवार को रुपया डॉलर के मुकाबले 26 पैसे चढ़कर 95.50 पर बंद हुआ था। चॉइस ब्रोकिंग के कमोडिटी और करंसी एनालिस्ट (टेक्निकल रिसर्च) आमिर मकदा ने कहा कि शुक्रवार को रुपये में उतार-चढ़ाव जारी रह सकता है। उन्होंने कहा कि तेल की कीमतों में थोड़ी गिरावट से रुपये को डॉलर के मुकाबले मजबूती मिल सकती है। वहीं, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की लगातार दखल देने की उम्मीद भी रुपये को सहारा दे रही है। इस बीच, गुरुवार को अमेरिका और ईरान ने एक-दूसरे पर कई मिसाइल हमले किए। दोनों देशों के बीच जवाबी हमलों का सिलसिला फिर शुरू हो गया है। इससे जल्द समाधान की उम्मीद कम होती दिख रही है। कुछ समय की शांति के बाद एक बार फिर बड़े युद्ध का खतरा बढ़ गया है। इस लड़ाई के और देशों तक फैलने की आशंका जताई जा रही है। जॉर्डन ने गुरुवार को लगातार दूसरे दिन ईरान की मिसाइलों को रोकने का दावा किया। वहीं, कुवैत ने कहा कि देश के उत्तरी हिस्से में हुए एक हमले में एक व्यक्ति की मौत हुई है। छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की ताकत मापने वाला डॉलर इंडेक्स 0.35 प्रतिशत बढ़कर 100.21 पर कारोबार कर रहा था। दुनिया में कच्चे तेल की कीमत तय करने वाला प्रमुख मानक ब्रेंट क्रूड 0.98 प्रतिशत गिरकर 88.16 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने गुरुवार को भारतीय शेयर बाजार में शुद्ध रूप से 3,623.51 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे।

तिमाही नतीजों के बाद चमका यह स्टॉक, 52 हफ्ते के हाई के करीब पहुंचा

मुंबई। गुजरात की एफएमसीजी कंपनी गोकुल एग्रो रिसोर्सेज के शेयर में तिमाही नतीजों के बाद 7% से ज़्यादा की तेजी आई। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर गुरुवार को मल्टीबैगर स्टॉक गोकुल एग्रो रिसोर्सेज के शेयर बुधवार को 223.20 रुपए पर बंद हुए थे। गुरुवार को यह 225.40 रुपए प्रति शेयर के स्तर पर खुले। कारोबार के दौरान शेयर 238.58 रुपए के उच्च स्तर तक पहुंच गया, जो इसके 52 सप्ताह के उच्चतम स्तर 249.92 रुपए के करीब है। कंपनी ने [illegible]27 की पहली तिमाही में मजबूत फाइनेंशियल पर्फोर्मेंस दिखाया है। इसके मुताबकि कंपनी की ऑपरेशंस से कंशोलिडेटेड रेवेन्यू साल-दर-साल 7% बढ़कर 5,281.95 करोड़ रुपए हो गया है। यह पिछले साल की इसी तिमाही में 4,924.35 करोड़ रुपए था। इस दौरान कंपनी की कुल आमदनी भी साल-दर-साल 7% बढ़कर 5,295.01 करोड़ रुपए हो गई। यह कारोबार की स्थिर वृद्धि को दर्शाता है। गोकुल एग्रो रिसोर्सेज का कहना है कि उत्पादों में विविधता, बेहतर परिचालन दक्षता, वैल्यू-एडेड प्रोडक्ट्स की बढ़ती हिस्सेदारी और निर्यात कारोबार से मिले बेहतर योगदान ने कंपनी के प्रदर्शन को मजबूती दी है। कंपनी के पास 575 से अधिक डिस्ट्रीब्यूटर्स का नेटवर्क है, जबकि इसकी उत्पादन क्षमता 20 लाख टन प्रति वर्ष है। कंपनी के उत्पाद देश के 28 राज्यों में उपलब्ध हैं और 33 देशों में निर्यात किए जाते हैं। कंपनी के चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर कनुभाई जे. ठक्कर ने कहा कि वित्त वर्ष की पहली तिमाही कंपनी के लिए मजबूत शुरुआत रही। इस दौरान कंपनी ने 5,282 करोड़ रुपए का राजस्व, 217 करोड़ रुपए का EBITDA और 124 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ दर्ज किया। उनके अनुसार, लाभ में वृद्धि राजस्व वृद्धि से अधिक रही, जो बेहतर सोर्सिंग, परिचालन क्षमता और विविध कारोबार मॉडल का परिणाम है। रिटर्न की बात करें तो कंपनी का शेयर निवेशकों के लिए लगातार बेहतर प्रदर्शन करता रहा है। पिछले एक सप्ताह में इसमें 8.5%, एक महीने में 9.44%, साल 2026 की शुरुआत से अब तक 27% और पिछले एक वर्ष में करीब 47% की तेजी दर्ज की गई है। वहीं, तीन वर्षों में इस शेयर ने लगभग 292% और पांच वर्षों में 1,107% का मल्टीबैगर रिटर्न दिया है।

त्योहारों से पहले खाद्य तेल होगा महंगे?: सूरजमुखी तेल पर संकट गहराया, पाम व सोयाबीन ऑयल में भी तेजी के संकेत

नई दिल्ली । देश में त्योहारों का सीजन दस्तक दे रहा है और इसी बीच खाद्य तेलों की मांग आसमान छूने लगी है। इससे एक बार फिर रसोई का बजट बिगड़ने के आसार बन गए हैं। काला सागर क्षेत्र में जंग और रूस-यूक्रेन युद्ध गहराने के कारण सूरजमुखी तेल की आपूर्ति बुरी तरह प्रभावित हुई है। भारत आने वाले जहाजों में 60 दिनों तक की देरी हो रही है, जिससे देश में खाद्य तेल महंगा होना तय माना जा रहा है। सॉल्वेंट एक्सट्रैक्ट एसोशिएशन ऑफ इंडिया के मुताबिक, चालू तेल वर्ष (2025-26) में जून 2026 के दौरान देश में खाद्य तेलों का आयात सालाना आधार पर 29 फीसदी घटा है। इससे तेल की उपलब्धता घटेगी जिसका सीधा असर कीमतों में बढ़ोतरी के रूप में दिख सकता है। मई 2026 में 13.39 लाख टन खाद्य तेलों का आयात हुआ था, जो जून में 11.11 लाख टन पर आ गया। पाम तेल का आयात 10.5 फीसदी घटकर 4.87 लाख टन रह गया। सोयाबीन तेल आयात 23 फीसदी गिरकर 3.81 लाख टन रह गया। दुनिया के कुल सूरजमुखी तेल

निर्यात में रूस और यूक्रेन की हिस्सेदारी 63 फीसदी है। यूक्रेन के ड्रोन हमलों में रूस के बंदरगाहों को निशाना बनाने से काला सागर का समुद्री मार्ग जहाजों के लिए असुरक्षित हो गया है। इसके चलते आयातकों के दर्जनों जहाज फंस गए हैं। भारत अपनी जरूरत का ज्यादातर सूरजमुखी तेल इसी क्षेत्र से मंगाता है। इस साल कमजोर मानसून के कारण तिलहन की बुवाई पिछड़ गई है। अब तक 163.54 लाख हेक्टेयर में तिलहन की बुवाई हुई है, जो पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 3.45 फीसदी कम है। तिलहन का सामान्य क्षेत्रफल 200 लाख हेक्टेयर है। घरेलू उत्पादन घटने की आशंका से आयात पर पहले से निर्भरता ज्यादा बढ़ गई है। इस महीने सूरजमुखी तेल कीमत सूचकांक 6 फीसदी तक चढ़ गया। तेल महंगा होने से अब मांग पाम और सोयाबीन तेल की तरफ जा रही है, जिससे उनके भाव भी तेजी से बढ़ रहे हैं। वैश्विक स्तर पर अल-नीनो के प्रभाव और इंडोनेशिया-मलेशिया के बायोफ्यूल में पाम तेल का इस्तेमाल बढ़ाए जाने से पहले ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में खाद्य तेलों का स्टॉक सीमित है। ऐसे में काला सागर संकट से सरसों तेल, सोयाबीन तेल, पाम तेल और सूरजमुखी तेल, सभी की खुदरा कीमतें आगामी महीनों में 8 से 12 फीसदी तक महंगी हो सकती हैं। नए विकल्प की तलाश : त्योहारों पर तेल की किल्लत न हो, इसके लिए भारतीय आयातक अब नए देशों का रुख कर रहे हैं। व्यापारी अपनी सूरजमुखी तेल आपूर्ति का आधा हिस्सा दक्षिण अमेरिकी देश अर्जेंटीना से मंगा रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया से कैनोला तेल और अर्जेंटीना-ब्राजील से सोयाबीन तेल का आयात बढ़ाया जा रहा है। जुलाई में पाम तेल का आयात 40 फीसदी बढ़कर 7 लाख टन तक पहुंचने की उम्मीद लगाई जा रही है।

15 साल के वैभव सूर्यवंशी को उपकप्तान बनाने पर भड़के हर्षा भोगले, बोले- आखिर सोच क्या है?

मुंबई ।

दलीप ट्रॉफी 2026-27 के लिए ईस्ट जोन की टीम में 15 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी को उपकप्तान बनाए जाने का फैसला चर्चा का विषय बन गया है। युवा बल्लेबाज को ईशान किशन की कप्तानी वाली टीम का उपकप्तान बनाए जाने पर कई पूर्व क्रिकेटरों और विशेषज्ञों ने हैरानी जताई है। मशहूर क्रिकेट कमेंटेटर हर्षा भोगले भी इस फैसले से सहमत नजर नहीं आए। हर्षा भोगले ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि वैभव सूर्यवंशी को सीनियर रेड-बॉल टीम का उपकप्तान बनाने के पीछे क्या सोच रही होगी। उन्होंने 12 पारियों में 17.25 की औसत से 207 रन बनाए हैं। उनकी प्रतिभा असाधारण है, लेकिन रेड-बॉल क्रिकेट में अभी उनके सीखने की शुरुआत ही हुई है।' वैभव सूर्यवंशी ने आईपीएल और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन कर तेजी से पहचान बनाई है। हालांकि प्रथम श्रेणी क्रिकेट में उनका अनुभव अभी काफी कम है। उन्होंने अब तक आठ प्रथम श्रेणी मैचों में 207 रन बनाए हैं। इस दौरान उनका सर्वोच्च स्कोर 93 रन रहा है। ऐसे में दलीप ट्रॉफी जैसे प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में उन्हें उपकप्तानी सौंपने के फैसले पर सवाल उठ रहे हैं। ईस्ट जोन टीम की कप्तानी विकेटकीपर-बल्लेबाज ईशान किशन को सौंपी गई है, जबकि वैभव सूर्यवंशी उपकप्तान होंगे। बल्लेबाजी क्रम में वैभव के अनुभवी बल्लेबाज अभिमन्यु ईश्वरन के साथ पारी की शुरुआत करने की उम्मीद है। ईस्ट जोन की टीम में भारत के अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी और मुकेश कुमार भी शामिल हैं, जिससे गेंदबाजी आक्रमण मजबूत नजर आ रहा है। ईस्ट जोन टीमः ईशान किशन (कप्तान), वैभव सूर्यवंशी (उपकप्तान), अभिमन्यु ईश्वरन, सुदीप घरामी, मोहम्मद शमी, मुकेश कुमार, शाहबाज अहमद, सूरज जायसवाल, विराट सिंह, कुमार कुशाग्र, शिखर मोहन, शुभ्रांशु सेनापति, अभिजीत सरकार, अनुकूल रॉय और डेनीश दास।

फुटबॉल जगत को बड़ा झटका, इटली और एसी मिलान के महान डिफेंडर फ्रैंको बरेसी का निधन

मिलान । इटली के पूर्व कप्तान और एसी मिलान के महान डिफेंडर फ्रैंको बरेसी का 66 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। लंबे समय से बीमारी से जूझ रहे बरेसी के निधन की पुष्टि शुक्रवार को इटली के दिग्गज क्लब एसी मिलान ने की। उनके जाने से विश्व फुटबॉल ने अपने सबसे महान रक्षात्मक खिलाड़ियों में से एक को खो दिया है। बरेसी को फुटबॉल इतिहास के सर्वश्रेष्ठ डिफेंडरों में गिना जाता है। वह सात बार बैलन डी'ओर के लिए नामित हुए और 1989 में दूसरे स्थान पर रहे। उन्हें 20वीं सदी के महान फुटबॉलरों की सूची में भी प्रमुख स्थान मिला था और 2013 में उन्हें इटैलियन फुटबॉल हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया। फ्रैंको बरेसी ने अपने पूरे पेशेवर करियर में केवल दो टीमों का प्रतिनिधित्व किया, एसी मिलान और इटली की राष्ट्रीय टीम। उन्होंने इटली के लिए 81 मैच खेले और 1982, 1990 तथा 1994 के तीन फीफा विश्व कप में हिस्सा लिया। 1994 विश्व कप में उन्होंने कप्तान के रूप में टीम को

फाइनल तक पहुंचाया और चोट से वापसी के बावजूद ब्राजील के खिलाफ यादगार प्रदर्शन किया। बरेसी ने एसी मिलान के लिए लगातार 20 सीजन खेले और क्लब को छह सीरी ए (स्कुडेट्टो), तीन यूरोपीय कप, दो इंटरकॉन्टिनेंटल कप, दो यूईएफए सुपर कप और चार इटालियन सुपर कप जिताने में अहम भूमिका निभाई। 1997 में संन्यास लेने के बाद एसी मिलान ने उनके सम्मान में उनकी प्रतिष्ठित नंबर-6 जर्सी को हमेशा के लिए रिटायर कर दिया। वर्ष 2020 से वह क्लब के मानद उपाध्यक्ष भी थे। इटालियन फुटबॉल महासंघ के अध्यक्ष जियोवानी मालागो ने कहा, 'इटालियन फुटबॉल ने अपना एक महान दिग्गज खो दिया है। बरेसी असाधारण खिलाड़ी थे, जिन्होंने पूरे करियर में सिर्फ एसी मिलान और इटली के लिए खेलना चुना। इसी समर्पण ने उन्हें करोड़ों प्रशंसकों के दिलों में हमेशा के लिए अमर बना दिया।' एसी मिलान ने अपने बयान में कहा, 'जिस व्यक्ति ने एसी मिलान की आत्मा और पहचान को जीया, उसके निधन की घोषणा करना बेहद कठिन है। फ्रैंको बरेसी हमेशा हमारे साथ रहेंगे। उनकी याद हमें हर कदम पर प्रेरित करती रहेगी, क्योंकि बरेसी हमेशा के लिए अमर हैं।' फ्रैंको बरेसी केवल एक महान डिफेंडर नहीं थे, बल्कि अनुशासन, नेतृत्व और क्लब के प्रति अटूट निष्ठा की मिसाल भी थे। एक ही क्लब के लिए दो दशक तक खेलना और देश की कप्तानी करते हुए विश्व कप फाइनल तक पहुंचना उन्हें फुटबॉल इतिहास के सबसे सम्मानित खिलाड़ियों में शामिल करता है।

कोहली ने रहाणे को बताया टेस्ट में पसंदीदा बल्लेबाजी साझेदार, सचिन ने करियर को सराहा

नई दिल्ली । स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाले अजिंक्य राहणे की तारीफ करते हुए उन्हें अपना पसंदीदा टेस्ट बल्लेबाजी साझेदार बताया। वहीं, महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने रहाणे के करियर की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने कभी महत्वपूर्ण पलों का पीछा नहीं किया। भारत के लिए अपना आखिरी मैच खेले के तीन साल बाद 38 वर्षीय राहणे ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास की घोषणा की। उन्होंने 2011 से 2023 के बीच भारत के लिए 85 टेस्ट, 90 वनडे और 20 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले। कोहली और राहणे ने भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में बल्लेबाजी करते हुए 10 शतकीय और 19 अर्धशतकीय साझेदारियां कीं। उनकी सर्वश्रेष्ठ साझेदारी इंदौर में न्यूजीलैंड के खिलाफ 365 रन की रही जिसमें कोहली ने 211 और राहणे ने अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ 188 रन की पारी खेली। कोहली ने एक्स पर लिखा, जिंक्स, शानदार करियर के लिए बधाई। आपने भारतीय क्रिकेट के लिए शानदार योगदान दिया है और अपनी यात्रा पर गर्व कर सकते हैं। स्लिप में सबसे सुरक्षित खिलाड़ियों में से एक और मेरे पसंदीदा टेस्ट बल्लेबाजी साझेदार। आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं। तेंदुलकर ने उस समय को याद किया जब उन्होंने मुंबई की ओर से रणजी ट्रॉफी में पहली बार इस प्रतिभाशाली युवा बल्लेबाज के साथ बल्लेबाजी की थी। तेंदुलकर ने लिखा, शानदार करियर के लिए बधाई। जब हमने पहली बार मुंबई के लिए साथ बल्लेबाजी की तब मैंने ऐसे खिलाड़ी को देखा जो कभी महत्वपूर्ण पलों का पीछा नहीं करता था। वे पल खुद आपके पास आए क्योंकि आप टीम के लिए कड़ी मेहनत करने को तैयार रहते थे। यही गुण ऑस्ट्रेलिया में आपकी सबसे यादगार उपलब्धि की पहचान बना। आपने दिखाया कि धैर्य आक्रामकता का विपरीत नहीं है, बल्कि अक्सर वही किसी टीम को निडर होकर खेलने का आत्मविश्वास देता है। शानदार करियर के लिए बधाई। आपको और आपके परिवार को भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

अगले साल होने वाले वनडे विश्वकप के वेन्यू घोषित, दक्षिण अफ्रीका में आठ स्थलों पर होंगे मैच

दुबई । दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया की मेजबानी में होने वाले 2027 वनडे विश्व कप के लिए 12 वेन्यू तय कर लिए गए हैं। सह-मेजबान दक्षिण अफ्रीका के आठ स्टेडियम इन खेलों की मेजबानी करेंगे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने गुरुवार को इसकी घोषणा की। यह प्रतिष्ठित 50 ओवर का टूर्नामेंट 24 साल बाद दक्षिण अफ्रीका में वापसी कर रहा है। इससे पहले 2003 में दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और केन्या ने आठवें पुरुष क्रिकेट विश्व कप की मेजबानी की थी।

जोहानिसबर्ग में आयोजित एक भव्य समारोह में दक्षिण अफ्रीका के आठ शहरों, जिम्बाब्वे के तीन शहरों और नामीबिया की राजधानी विंडहोक को टूर्नामेंट के सह-मेजबान के रूप में प्रस्तुत किया गया।

इस मौके पर दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज क्रिकेटर ग्रीम स्मिथ, मखाया एनटिनी, हाशिम अमला, तेम्बा बावुमा और कगिसो रबाडा के अलावा जिम्बाब्वे के हैमिल्टन मासकाद्जा और नामीबिया के रुडोल्फ जानसेन वान वुरेन भी मौजूद थे। दक्षिण अफ्रीका के आठ

शहर, जिम्बाब्वे के तीन और नामीबिया का एक शहर अगले साल होने वाले इस वैश्विक टूर्नामेंट के मुकाबलों की मेजबानी करेंगे।

दक्षिण अफ्रीका के इन स्टेडियम में होंगे मैच

वांडरर्स स्टेडियम (जोहानिसबर्ग),
सुपरस्पोर्ट पार्क, सेंचुरियन (श्वाने),
न्यूलैंड्स क्रिकेट ग्राउंड (केपटाउन),
किंग्समीड क्रिकेट ग्राउंड (डरबन),
सेंट जॉर्ज पार्क (गकेबेर्हा),
मंगाउंग ओवल (ब्लोमफोंटेन),
बोलैंड पार्क (पार्ल)
बफेलो पार्क (कुगोम्पो सिटी)
जिम्बाब्वे के तीन शहर करेंगे मेजबानी
हरारे स्पोर्ट्स क्लब (हरारे)
क्वींस स्पोर्ट्स क्लब (बुलावायो)
फाले मोसी-ओआ-टुन्या अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम (विक्टोरिया फॉल्स)
नामीबियाः नामीबिया क्रिकेट ग्राउंड (विंडहोक)

आईसीसी अध्यक्ष जय शाह ने कहा, 24 साल बाद इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट की दक्षिण अफ्रीका में वापसी क्रिकेट के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। हमें पूरा विश्वास है कि दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया एक यादगार आयोजन करेंगे, जो उस गर्मजोशी, जुनून और समृद्ध विविधता को प्रदर्शित करेगा जो इस क्षेत्र को वास्तव में अनूठा बनाती है।

नए प्रारूप में होगा टूर्नामेंट

आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2027 में 57 मुकाबले खेले जाएंगे। टूर्नामेंट में अधिक प्रतिस्पर्धा और रोमांच लाने के लिए तीन चरणों वाला नया प्रारूप अपनाया गया है। सबसे पहले सुपर सीरीज खेली जाएगी जिसमें रैंकिंग में 12वें से 14वें स्थान पर रहने वाली तीन टीम राउंड-रॉबिन प्रारूप में आमने-सामने होंगी। इसमें विजेता टीम अगले चरण में पहुंचेगी। इसके बाद 12 टीम के बीच 30 मैच का चरण होगा। देशों की टीम को छह-छह टीम के दो ग्रुप में बांटा जाएगा और दोनों ग्रुप में राउंड-रॉबिन आधार पर मुकाबले होंगे। प्रत्येक ग्रुप की शीर्ष तीन टीमें, साथ ही दोनों ग्रुप में चौथे स्थान पर रहने वाली टीम में से बेहतर प्रदर्शन करने वाली एक टीम सुपर-7 चरण में पहुंचेगी। सुपर-7 चरण में कुल 21 राउंड-रॉबिन मैच खेले जाएंगे। इसके बाद शीर्ष चार टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी। सेमीफाइनल में सुपर-7 में शीर्ष पर रहने वाली टीम का मुकाबला चौथे स्थान की टीम से होगा जबकि दूसरे और तीसरे स्थान पर रहने वाली टीमें दूसरे सेमीफाइनल में आमने-सामने होंगी।

एशियाई खेल 2026 शुरू होने में 50 दिन शेष, दक्षिण कोरिया का लक्ष्य दूसरा स्थान

जापान के अइची-नागोया में आयोजित होने वाले 2026 एशियाई खेलों के शुरू होने में केवल 50 दिन शेष हैं, जो 19 सितंबर से 4 अक्टूबर तक चलेंगे। इस महाद्वीपीय खेल महोत्सव में 45 राष्ट्रीय ओलंपिक समितियों के एथलीट 43 खेलों और 71 उप-आयोजनों में प्रतिस्पर्धा करेंगे। दक्षिण कोरिया ने 1,000 से अधिक एथलीटों और कर्मचारियों के दल के साथ इस आयोजन में दूसरा स्थान हासिल करने का लक्ष्य रखा है। एशिया का सबसे बड़ा खेल महोत्सव, 2026 अइची-नागोया एशियाई खेल, अब शुरू होने में केवल 50 दिन शेष हैं। यह भव्य आयोजन 19 सितंबर को जापान के अइची प्रान्त के नागोया में स्थित पारोमा मिजुहो स्टेडियम में उद्घाटन समारोह के साथ शुरू होगा और 4 अक्टूबर तक 16 दिनों तक चलेगा। खेलों का विस्तार और नए खेल ओलंपिक काउंसिल ऑफ एशिया के तहत 45 राष्ट्रीय ओलंपिक समितियों के एथलीट 43 खेलों और 71 उप-आयोजनों में 468 स्वर्ण पदकों के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। यह पिछले हांग्जो खेलों की तुलना में तीन खेल और 10 उप-आयोजन अधिक हैं। इस बार खेलों में 'वर्चुअल ताइक्वांडो' (वीआर का उपयोग करके), 'पैडल' (टेनिस-स्क्वैश का मिश्रण), और 'टेकबॉल' (फुटबॉल और टेबल टेनिस का मिश्रण) जैसे नए खेल शामिल किए गए हैं। मुख्य

प्रतियोगिताएं अइची प्रान्त में होंगी, लेकिन तैराकी, डाइविंग और घुड़सवारी जैसे कार्यक्रम टोक्यो में आयोजित किए जाएंगे, जबकि फुटबॉल मैच ओसाका और शिजुओका में खेले जाएंगे। दक्षिण कोरिया का लक्ष्य और प्रमुख एथलीट दक्षिण कोरिया का लक्ष्य अइची-नागोया खेलों में दूसरा स्थान हासिल करना है, जो 2014 के बाद से हासिल नहीं किया जा सका है। पिछले हांग्जो खेलों में, दक्षिण कोरिया 42 स्वर्ण, 59 रजत और 89 कांस्य पदकों के साथ चीन और जापान के बाद तीसरे स्थान पर रहा था।

इस बार, कोरिया 1,000 से अधिक एथलीटों और कर्मचारियों का दल भेजेगा। प्रमुख खिलाड़ियों में बैडमिंटन विश्व चैंपियन एन से-यंग शामिल हैं, जो पिछले साल 11 टूर्नामेंट जीतकर लगातार दूसरी बार खिताब जीतने का लक्ष्य रख रही हैं। ओ संग-उक, जिन्होंने हांग्जो और 2024 पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीते थे, वे अपने खिताब का बचाव करेंगे। पेरिस ओलंपिक में तीन बार स्वर्ण पदक जीतने वाले किम वू-जिन के नेतृत्व वाली दक्षिण कोरियाई तीरंदाजी टीम से भी मजबूत प्रदर्शन की उम्मीद है। अन्य प्रतिभाशाली एथलीटों में तैराक ह्वांग सन-वू और किम वू-मिन, टेबल टेनिस स्टार शिन यू-बिन और जिम्नास्टिक की खिलाड़ी येओ सेओ-जियोंग शामिल हैं। टीम खेल और ई-स्पोर्ट्स की तैयारी टीम खेलों में, दक्षिण कोरिया की बेसबॉल टीम, जो 2010 ग्वांगझोउ खेलों के बाद से लगातार चार स्वर्ण पदक जीत चुकी है, ताइवान, हांगकांग और थाईलैंड के साथ ग्रुप बी में प्रतिस्पर्धा करेगी। कोच ली मिन-सुंग के नेतृत्व वाली पुरुष फुटबॉल टीम भी चौथा लगातार स्वर्ण पदक जीतने की कोशिश करेगी। यूरोपीय-आधारित खिलाड़ी बे जून-हो, यांग मिन-ह्युक और किम जी-सू को ग्रुप डी में सऊदी अरब और कतर के खिलाफ मुकाबले के लिए टीम में शामिल किया गया है। ताएगुक वारियर्स ने गहन प्रशिक्षण शुरू कर दिया है। विशेष रूप से, ई-स्पोर्ट्स एथलीट पहली बार जिंचियोन एथलीट विलेज में पहुंचे हैं, जो अइची-नागोया खेलों में 11 उप-आयोजनों के लिए तैयारी कर रहे हैं। प्रशिक्षण शिविर में छह ई-स्पोर्ट्स विषयों के 22 एथलीट शामिल हैंः बैटल ग्राउंड मोबाइल, पुयो पुयो चैंपियंस, ई-फुटबॉल, ग्रान टुरिस्मो 7, पोकेमॉन यूनाइट और द फिफ्थ पर्सन।

माइक्रोसॉफ्ट की सुनामी: एक दिन में 39 लाख करोड़ जोड़े, एनवीडिया को पछाड़ इस मामले में बनी नंबर-1 कंपनी

बिजनेस डेस्क ।

माइक्रोसॉफ्ट ने शेयर बाजार के इतिहास में ऐसा रिकॉर्ड बनाया है, जो पहले कभी नहीं देखा गया। कंपनी ने एक ही कारोबारी दिन में अपने बाजार पूंजीकरण में करीब 450 अरब डॉलर (करीब 39 लाख करोड़ रुपये) जोड़ लिए। इसके साथ ही माइक्रोसॉफ्ट ने एआई चिप निर्माता एनवीडिया को एकदिनी बढ़त के मामले में पीछे छोड़ दिया है। तिमाही नतीजों के बाद कंपनी के शेयरों में करीब नौ फीसदी की जोरदार तेजी आई। इस उछाल के पीछे सबसे बड़ी वजह माइक्रोसॉफ्ट के क्लाउड प्लेटफॉर्म एज्यूर का उम्मीद से कहीं बेहतर प्रदर्शन और एआई कारोबार में मजबूत बढ़त रही।

एआई पर भारी निवेश आखिर रंग लाया

पिछले एक साल से निवेशकों के बीच यह चिंता थी कि माइक्रोसॉफ्ट समेत बड़ी टेक कंपनियां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर जरूरत से ज्यादा खर्च कर रही हैं। कंपनी ने डाटा सेंटर, एआई चिप्स और क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर पर अरबों डॉलर निवेश किए थे। आशंका थी कि इससे मुनाफे पर दबाव पड़ेगा। हालांकि, ताजा तिमाही नतीजों ने इन चिंताओं को काफी हद तक खत्म कर दिया। माइक्रोसॉफ्ट ने दिखाया कि एआई पर किया गया निवेश अब

तेजी से कमाई में बदल रहा है और क्लाउड कारोबार को नई रफ्तार दे रहा है।

एज्यूर बना सबसे बड़ा गेम चेंजर

माइक्रोसॉफ्ट की इस रिकॉर्ड बढ़त में सबसे अहम भूमिका उसके क्लाउड प्लेटफॉर्म एज्यूर की रही। दुनियाभर की कंपनियां एआई सेवाओं और क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर पर तेजी से खर्च बढ़ा रही हैं, जिसका सीधा फायदा माइक्रोसॉफ्ट को मिला। एज्यूर की आय बाजार के अनुमान से बेहतर रही। इसके साथ ही कंपनी ने चालू तिमाही के लिए भी मजबूत आउटलुक दिया, जिससे निवेशकों का भरोसा और बढ़ गया कि एआई सेवाओं की मांग आगे भी मजबूत बनी रहेगी।

कई देशों के शेयर बाजार से बड़ी बढ़त

माइक्रोसॉफ्ट ने एक ही दिन में जितनी वैल्यू जोड़ी, वह दक्षिण अफ्रीका, वियतनाम और तुर्की जैसे देशों के पूरे शेयर बाजार के आकार से भी अधिक बताई जा रही है। यह शेयर बाजार के इतिहास में किसी भी कंपनी द्वारा एक दिन में दर्ज की गई सबसे बड़ी मार्केट कैप बढ़ोतरी मानी जा रही है।

पूरे टेक सेक्टर को मिला बड़ा संदेश

माइक्रोसॉफ्ट के नतीजों ने सिर्फ कंपनी ही नहीं, बल्कि पूरे टेक सेक्टर में एआई निवेश को लेकर भरोसा बढ़ाया है।

इससे संकेत मिला है कि एआई सेवाओं की मांग अभी भी मजबूत बनी हुई है। इसका फायदा आने वाले समय में अमेजन, अल्फाबेट और एनवीडिया जैसी बड़ी टेक कंपनियों को भी मिल सकता है।

बाइक में दुपट्टा फंसने से महिला घायल

कड़ी मशक्कत के बाद किसी तरह दुपट्टा काट कर बचाई गई उसकी जान

बड़हलगंज। (वेबवार्ता) बाइक पर पीछे बैठ कर जा रही महिला संतुलन बिगड़ने से गिर गई। जिसकी वजह से उसका दुपट्टा मोटरसाइकिल की चेन में उलझ कर गाले कस गया। पीछे चल रहे एक बाइक सवार में कड़ी मशक्कत के बाद वाहन की चाभी से दुपट्टा काट कर महिला की जान बचाई। इस दौरान सड़क पर भीड़ जमा हो गई। गुरुवार को सुबह करीब 10 बजे ग्राम मैभरा की रहने वाली पूजा परिचित की बाइक से कपरवार की तरफ से रामजानकी मार्ग के रास्ते अपने घर जा रही थी। ग्राम नेतवार पट्टी के समीप गिट्टी पर बाइक उछलने से वह नीचे गिर गई। जिसमें उसका दुपट्टा पहिये और चेन में उलझ कर गले मे कस गया। पीछे से आरहे नेशनल पीजी कालेज के कार्मिक सुधांशु पाण्डेय ने तत्परता दिखाते हुए अपने मोटरसाइकिल की चाभी से कड़ी मेहनत के बाद किसी तरह दुप्पटे को काटा जिससे महिला की जान बच पाई। घटना के बाद मार्ग पर काफी भीड़ जुट गई। चोटिल महिला को निजी चिकित्सक से प्राथमिक इलाज के बाद अस्पताल भेजा गया।

देवरिया के युवा वैज्ञानिक डॉ. शाश्वत बिश्वनाथन को मिली प्रतिष्ठित एनपीडीएफ फ़ेलोशिप

(वेबवार्ता)

भटनी के चांदपार गांव के बेटे की राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी उपलब्धि, आईआईटी कानपुर में करेंगे स्वच्छ हाइड्रोजन ईंधन पर शोध

भटनी देवरिया। भटनी क्षेत्र के ग्राम चांदपार निवासी युवा वैज्ञानिक डॉ शाश्वत बिश्वनाथन, स्वर्गीय डॉ. संजय कुमार श्रीवास्तव के पुत्र, को भारत की प्रतिष्ठित एनपीडीएफ प्राप्त हुई है। यह फेलोशिप देश के चुनिंदा उत्कृष्ट शोधकर्ताओं को प्रदान की जाती है। उनकी इस उपलब्धि से परिवार के साथ-साथ पूरे देवरिया जिले में खुशी का माहौल है। डॉ. शाश्वत ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय विद्यालयों से प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान आईआईटी जोधपुर से पीएचडी की उपाधि हासिल की। अपने लगभग पांच वर्षों के शोध कार्यकाल में उन्होंने 10 से अधिक उच्च-स्तरीय शोध पत्र अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित किए हैं, जिन्हें विश्वभर के शोधकर्ताओं द्वारा उद्धृत किया जा रहा है।एनपीडीएफ फेलोशिप के अंतर्गत अब डॉ. शाश्वत भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान आईआईटी कानपुर में 'समुद्र के पानी से सीधे स्वच्छ हाइड्रोजन ईंधन का उत्पादन' विषय पर शोध करेंगे। यह शोध भविष्य की स्वच्छ एवं टिकाऊ ऊर्जा तकनीक विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। डॉ. शाश्वत ने अपनी इस सफलता का श्रेय अपने दिवंगत पिता स्वर्गीय डॉ संजय कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन, प्रेरणा और परिवार के सहयोग को दिया है। उनकी यह उपलब्धि न केवल उनके पिता के सपनों को साकार करने वाली है, बल्कि देवरिया के युवाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गई है। ग्रामीण परिवेश से निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर मिली यह सफलता पूरे जिले के लिए गौरव का विषय है। स्थानीय लोगों और शुभचिंतकों ने डॉ शाश्वत बिश्वनाथन को बधाई देते हुए उनके

दो सगी बहनों से छेड़छाड़ व मारपीट मामले में चार नामजद के खिलाफ एफ आई आर दर्ज

रामकोला, कुशीनगर। (वेबवार्ता) रामकोला थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत दिउलिया मनिया छपरा, टोला दिउलिया में दो सगी बहनों के साथ कथित छेड़छाड़, मारपीट, लज्जा भंग करने के प्रयास एवं जान से मारने की धमकी के मामले में पुलिस ने चार नामजद आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, वादी महेश पासवान की तहरीर पर थाना रामकोला में एफआईआर संख्या 0390/2026 दर्ज की गई है। तहरीर में आरोप लगाया गया है कि 29 जुलाई 2026 को दोपहर लगभग 3 बजे उनकी बहन के साथ पड़ोसी सिद्धार्थ पासवान उर्फ राहुल ने अश्लील इशारे करते हुए छेड़छाड़ की। विरोध करने पर आरोपी ने कथित रूप से मारपीट की, कपड़े फाड़ दिए तथा लज्जा भंग करने का प्रयास किया। शोर सुनकर बचाने पहुंची दूसरी बहन के साथ भी कथित रूप से बिंदावती देवी, प्रदीप पासवान और अंशु पासवान ने मिलकर मारपीट की, जिससे दोनों बहनें घायल हो गईं। पीड़ित पक्ष का आरोप है कि आरोपियों ने जान से मारने की धमकी भी दी। घटना की सूचना डायल-112 और पुलिस चौकी को दी गई, जिसके बाद घायलों का चिकित्सीय परीक्षण कराया गया। पुलिस ने मामले में भारतीय न्याय संहिता की धाराओं 76, 115(2), 352, 351(3) एवं 110 के तहत मुकदमा दर्ज कर जांच उपनिरीक्षक ओम प्रकाश गुप्ता को सौंपी है। पुलिस का कहना है कि मामले की निष्पक्ष जांच कर साक्ष्यों के आधार पर आगे की विधिक

डीएम के जनता दर्शन में पहुंची फरियाद, सात वर्ष पुराना भूमि विवाद मौके पर सुलझा

कुशीनगर। (वेबवार्ता) जिलाधिकारी महेंद्र सिंह तंवर के जनता दर्शन में शुक्रवार को एक सेवानिवृत्त होमगार्ड की फरियाद पर त्वरित कार्रवाई करते हुए प्रशासन ने सात वर्ष से लंबित भूमि विवाद का मौके पर ही निस्तारण करा दिया। करीब तीन घंटे चली सुनवाई के बाद सभी पक्षों की सहमति से विवाद समाप्त हो गया। ग्राम पकड़ी बुजुर्ग, तहसील पडरौना निवासी सेवानिवृत्त होमगार्ड छोटेलाल सिंह, पुत्र जताई सिंह, जनता दर्शन में पहुंचे और जिलाधिकारी को बताया कि वर्ष 2019 से वह जमीन के बंटवारे के मामले में न्यायालयों के चक्कर लगा रहे हैं। उन्होंने अपनी जमीन पर कब्जा दिलाने की गुहार लगाई। प्रकरण के अनुसार, मामला वर्ष 2019 से उप जिलाधिकारी (न्यायिक) पडरौना की अदालत में विचाराधीन था। 12 अगस्त 2025 को वाद का निस्तारण हो गया था, लेकिन कब्जा नहीं मिल सका। इसके बाद विपक्षी पक्ष ने अपर आयुक्त (न्यायिक), गोरखपुर मंडल, गोरखपुर के समक्ष अपील दायर की, जिसे 26 जुलाई 2026 को खारिज कर दिया गया। इसके उपरांत पत्रावली पुनः अग्रिम कार्रवाई के लिए भेजी गई। फरियादी की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी (न्यायिक) पडरौना डॉ. संतराज सिंह बघेल को तत्काल मौके पर जाकर प्रकरण का निस्तारण करने के निर्देश दिए। निर्देश के अनुपालन में डॉ. बघेल ग्राम पकड़ी बुजुर्ग पहुंचे, जहां गाटा संख्या 298, 383, 525 एवं 374 से संबंधित विवाद में सभी पक्षों को सुनकर राजस्व अभिलेखों के आधार पर विधिवत कार्रवाई की। करीब तीन घंटे चली सुनवाई के बाद छोटेलाल सिंह, रामप्रवेश, संस्कार, सरोज देवी सहित सभी संबंधित पक्षों के बीच वर्षों से चला आ रहा विवाद सुलझा दिया गया। इस दौरान क्षेत्रीय लेखपाल पिंकी मिश्रा, राजस्व निरीक्षक श्रीनिवास सिंह तथा बड़ी संख्या में ग्रामवासी भी उपस्थित रहे। उप जिलाधिकारी (न्यायिक) डॉ. संतराज सिंह बघेल ने बताया कि प्रकरण के समाधान में लगभग तीन घंटे का समय लगा, लेकिन सबसे संतोषजनक बात यह रही कि सभी पक्ष निर्णय से संतुष्ट हैं। अब उन्हें न्यायालय या तहसील के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। प्रशासन का उद्देश्य आपसी सहमति एवं विधिक प्रक्रिया के माध्यम से ऐसे पुराने विवादों का समयबद्ध समाधान करना है।

सिलवासा में युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत, गांव में शोक

(वेबवार्ता)

(मृतक राजन मौर्या का फाइल फोटो)

भरेहेचौरा के सोनबरसा टोला निवासी राजन मौर्य की मौत से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल

भटनी देवरिया। थाना भटनी क्षेत्र के ग्राम भरेहेचौरा स्थित सोनबरसा टोला निवासी स्वर्गीय परमानंद मौर्य के बड़े पुत्र राजन मौर्य की सिलवासा (दमन) में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया और पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई। बताया जाता है कि राजन मौर्य तीन भाइयों में सबसे बड़े थे और परिवार के मुख्य कमाने वाले सदस्य थे। उनकी अभी शादी नहीं हुई थी। रोजी-रोटी की तलाश में वह सिलवासा में रहकर काम करते थे। उनकी अचानक हुई मौत से परिजन सदमे में हैं और रो-रोकर उनका बुरा हाल है। मृत्यु किन परिस्थितियों में हुई, इसकी स्पष्ट जानकारी अभी सामने नहीं आई है। परिजन घटना की पूरी जानकारी मिलने का इंतजार कर रहे हैं। गांव में शोक का माहौल है और बड़ी संख्या में लोग परिवार को ढांढस बंधाने पहुंच रहे हैं।

छात्रवृत्ति प्रोफाइल लॉक पर कड़े तेवर: डीएम की चेतावनी, लापरवाही पर छिनेगी स्कूलों की मान्यता

देवरिया। शासकीय छात्रवृत्ति योजनाओं से विद्यार्थियों को वंचित रखने वाले लापरवाह विद्यालयों के खिलाफ कलेक्ट्रेट प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया है। शनिवार को अपने कार्यालय कक्ष में सोशल सेक्टर से जुड़े विभागों की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने कक्षा 9 से 12 तक के छात्र-छात्राओं की छात्रवृत्ति प्रोफाइल लॉक न करने वाले शिक्षण संस्थानों को सख्त चेतावनी जारी की है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि यदि लापरवाही के कारण कोई भी छात्र आवेदन से वंचित रहा, तो संबंधित विद्यालय के खिलाफ मान्यता निरस्तीकरण तक का कदम उठाया जाएगा। समीक्षा बैठक के दौरान सामने आया कि जिले में छात्रवृत्ति प्रोफाइल लॉक करने की अंतिम तिथि 5 अगस्त निर्धारित होने के बावजूद अब तक केवल 20 प्रतिशत विद्यालयों ने ही यह प्रक्रिया पूरी की है। इस धीमी प्रगति पर तीव्र नाराजगी जताते हुए

जिलाधिकारी ने जिला विद्यालय निरीक्षक और सोशल सेक्टर के अफसरों को कड़े निर्देश जारी किए। उन्होंने कहा कि तय समयसीमा के भीतर शत-प्रतिशत प्रोफाइल लॉक कराना सुनिश्चित किया जाए, ताकि आर्थिक रूप से कमजोर और मेधावी छात्रों का भविष्य प्रभावित न हो। जिलाधिकारी ने ताकीद की कि हीलाहवाली करने वाले संस्थानों की सीधी जवाबदेही तय की जाएगी। उन्होंने जिला समाज कल्याण अधिकारी सुधीर पांडेय, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी और डीआईओएस को निर्देश दिया कि वे दैनिक स्तर पर प्रगति की समीक्षा करें और शिथिलता बरतने वाले प्रबंधकों व प्राचार्यों के खिलाफ तत्काल कठोर कार्रवाई का प्रस्ताव भेजें। बैठक में सोशल सेक्टर से जुड़े विभिन्न विभागों के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे।